CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH - 5

|| the gurukul ||

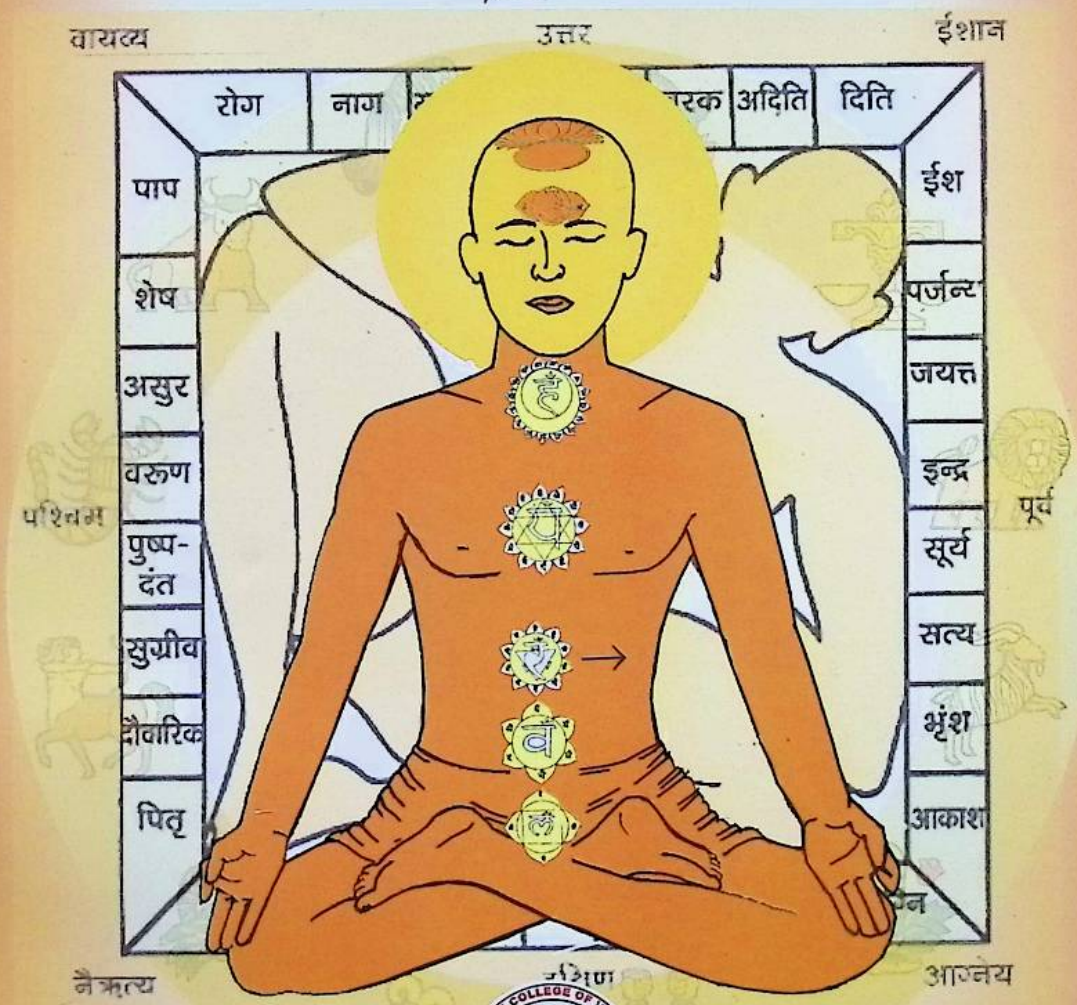

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 5

अनुक्रमणिका

अध्याय 1	: हाथ में पर्वत, प्रभाव	03–25
अध्याय 2	: सूर्य पर्वत	26–38
अध्याय 3	: गुरू पर्वत	39–50
अध्याय 4	: अन्य पर्वत	51–60
अध्याय 5	: हथेली का रंग	61–62
अध्याय 6	: शनि एवं अन्य पर्वत	63–83

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ में पर्वत

1. प्रस्तावना

हांथों के बाह्य, बनावट, सघनता, लोच, त्वचा के रंगों व बनावट के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद अन्य मुख्य बिंदुओं का अध्ययन करना चाहिये। इसमें सबसे मुख्य भाग हथेली हैं। हथेली में मुख्य रूप से दो भाग होते है।

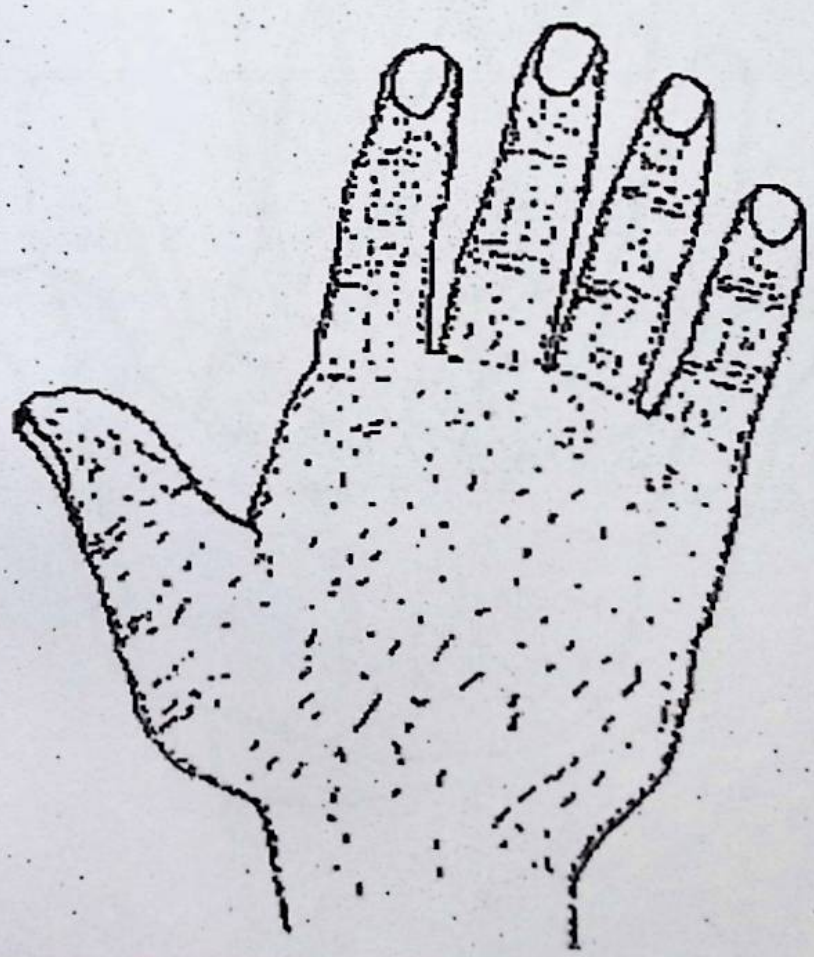

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. उठे हुये भाग 2. समतल या सपाट भाग। इन्हीं उभरे व समतल भाग को पर्वत क्षेत्र कहते है।

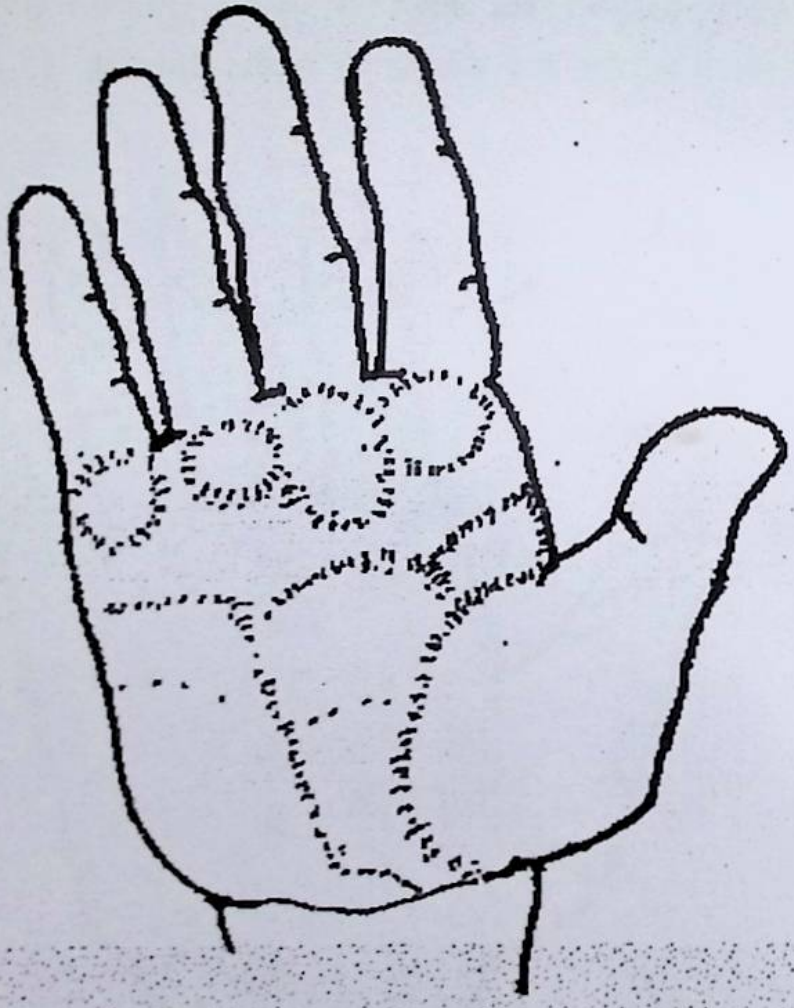

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन्हीं पर्वत क्षेत्र की उत्पत्ति के आधार पर इन्हें विभिन्न ग्रहों व उन ग्रहों के गुणों के आधार पर विभाजित किया गया है क्योंकि ग्रह विशेष की विशेषता ही जातक के लक्षणों को परिभाषित करती हैं।

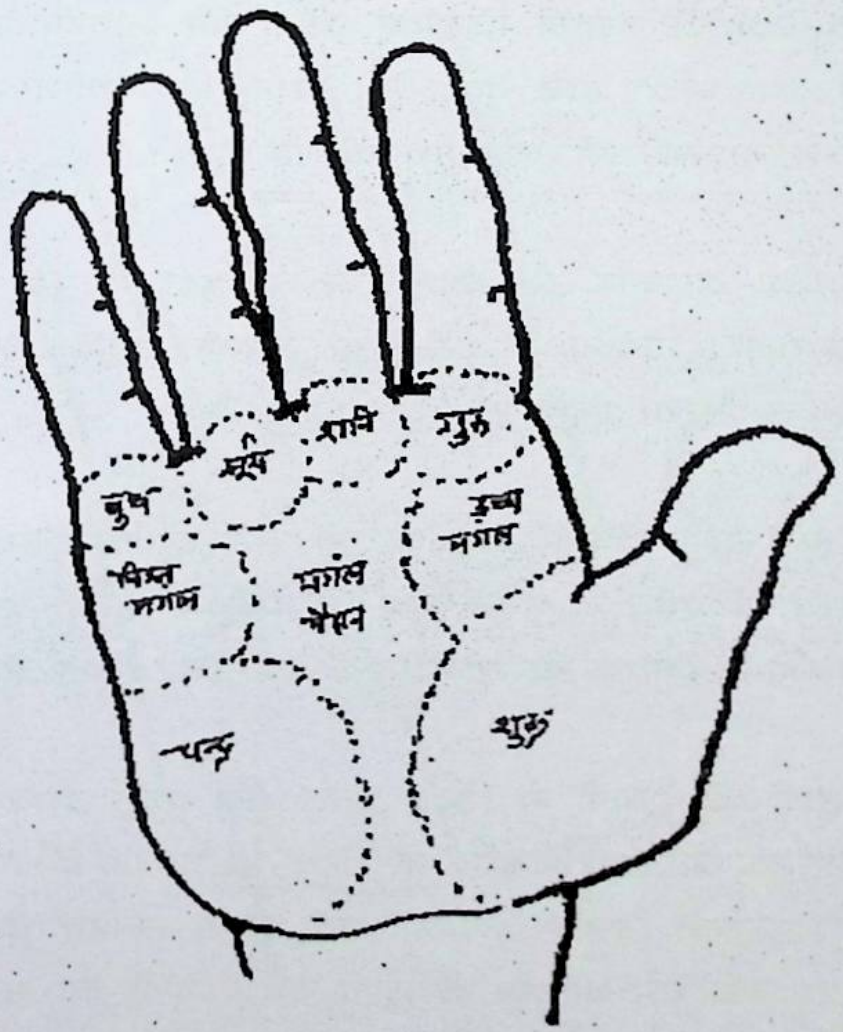

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन पर्वतों व पर्वत क्षेत्रों से संबंधित सूक्ष्म जानकारी का विस्तृत रूप से अध्ययन करना चाहिये। ये पर्वत ही व्यक्ति के स्वाभाविक गुणों, लक्षणों एवं उसकी मानसिक स्थिति के लिये उत्तरदायी हैं।

जब जातक अपने स्वयं के बारे में विचार करेगा तब मुख्य रूप से उसकी जिज्ञासा रहेगी की भविष्य में उसके साथ क्या घटित होने वाला हैं। उसके लिये कौन सा कार्य श्रेष्ठ रहेगा या उसे व्यवसाय करना चाहिये।

आगे जा कर उसे कोई रोग या बड़ी बीमारी तो नहीं हो जायेगी। भविष्य से डरा हुआ जातक अपने लिये सरल व सफल रास्ता ढुंढ़ने में लगा रहता है।

इन सभी विकट संभावना को समझने के लिये जातक के हाथ में पर्वत व पर्वत क्षेत्र पर पहुँचने वाली रेखाओं के अध्ययन से जातक के सभी प्रश्नों का उत्तर मिल सकता हैं।

हाथ की हथेली मे स्थित पर्वत क्षेत्र एवं उनकी स्थिति मनुष्य के व्यतित्व निर्माण के लिये उत्तरदायी है। पर्वत की उत्पत्ति, उसके विकास आकार एवं उसके झुकाव के कारकों का अध्ययन कर जातक के गुणों व अवगुणों का मुख्य रूप से अध्ययन किया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्येक अंगुली का नाम उसके उत्पत्ति स्थल, इन आधार पर्वतों के गुणों व नामों पर रखा गया हैं। स्थूल दृष्ठि से देखने पर पर्वत क्षेत्र को मांस का उभार कहा जा सकता हैं।

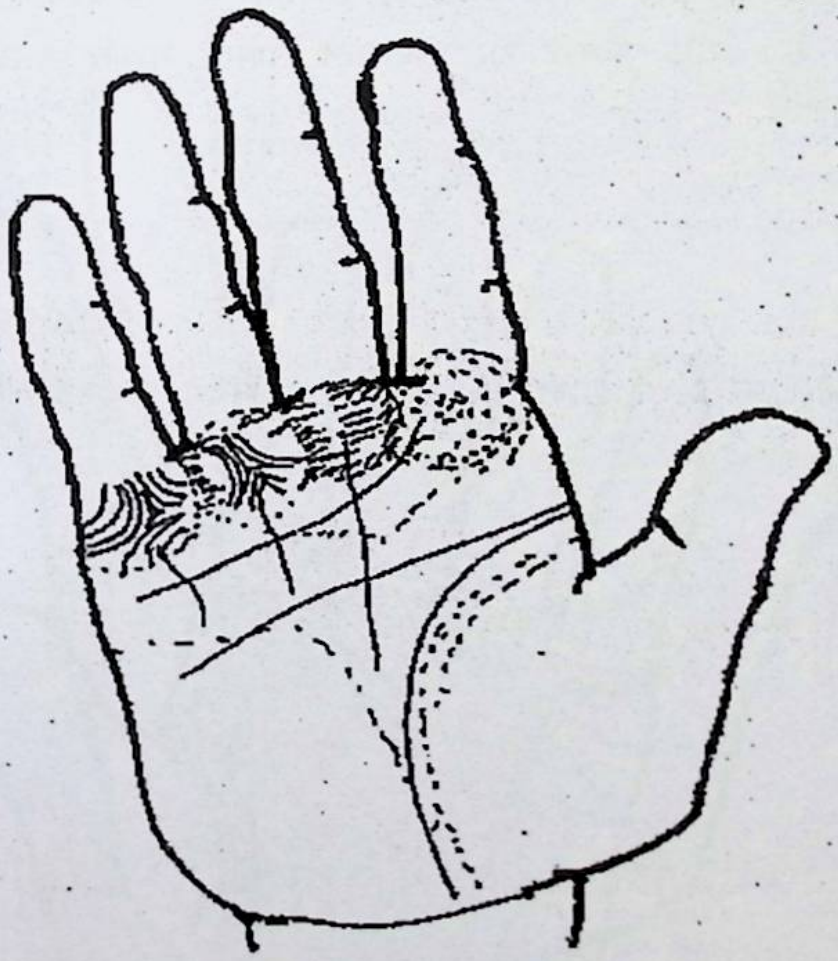

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. हाथों में पर्वतों का स्थान

जब जातक का हाथ देखा जाता हैं तब हथेली को सामान्य दृष्टि से देखने पर कुछ सामान्य उभार देखे जाते है ये उभार अगुंलियों के नीचे के हिस्से पर, अंगूठे के नीचे का हिस्सा, कलाई के जोड. पर, हथेली के किनारे वाले भाग होते है। कुछ उभरी या समतल उभार वाली आकृति पाई जाती हैं।

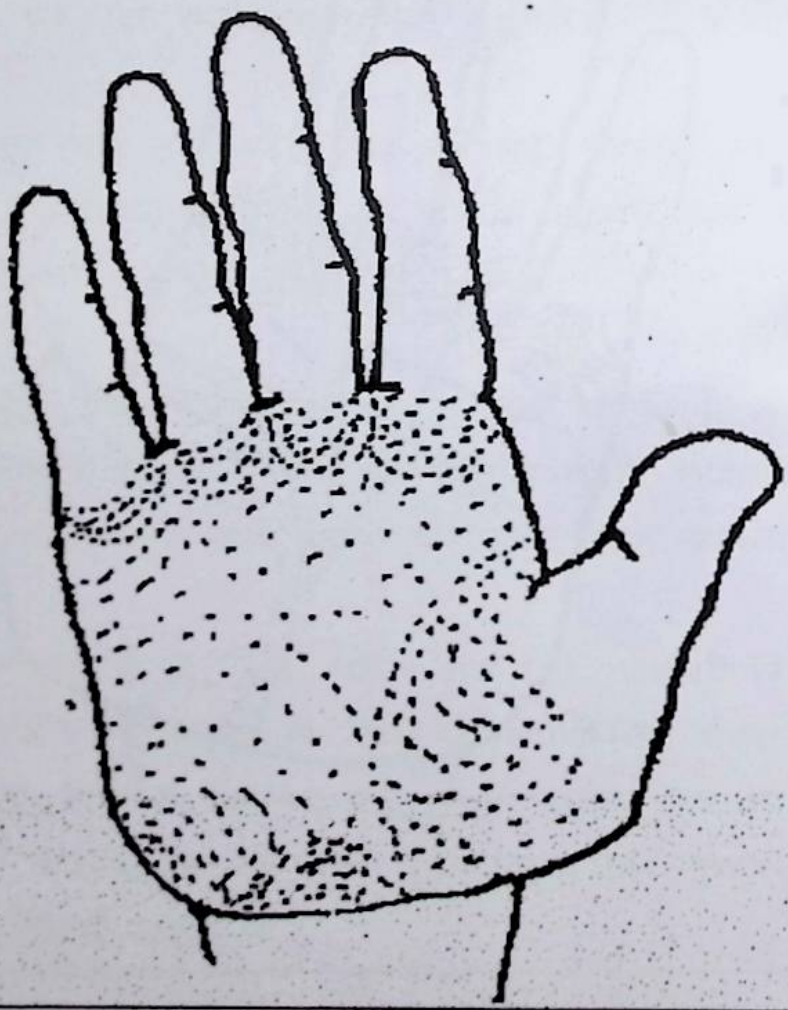

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये ही उभार पर्वत कहलाते है। एवं इनके आसपास का क्षेत्र पर्वत क्षेत्र कहलाता है। उभरे हुये पर्वतों को दृढ़ और विकसित माना जाता हैं।

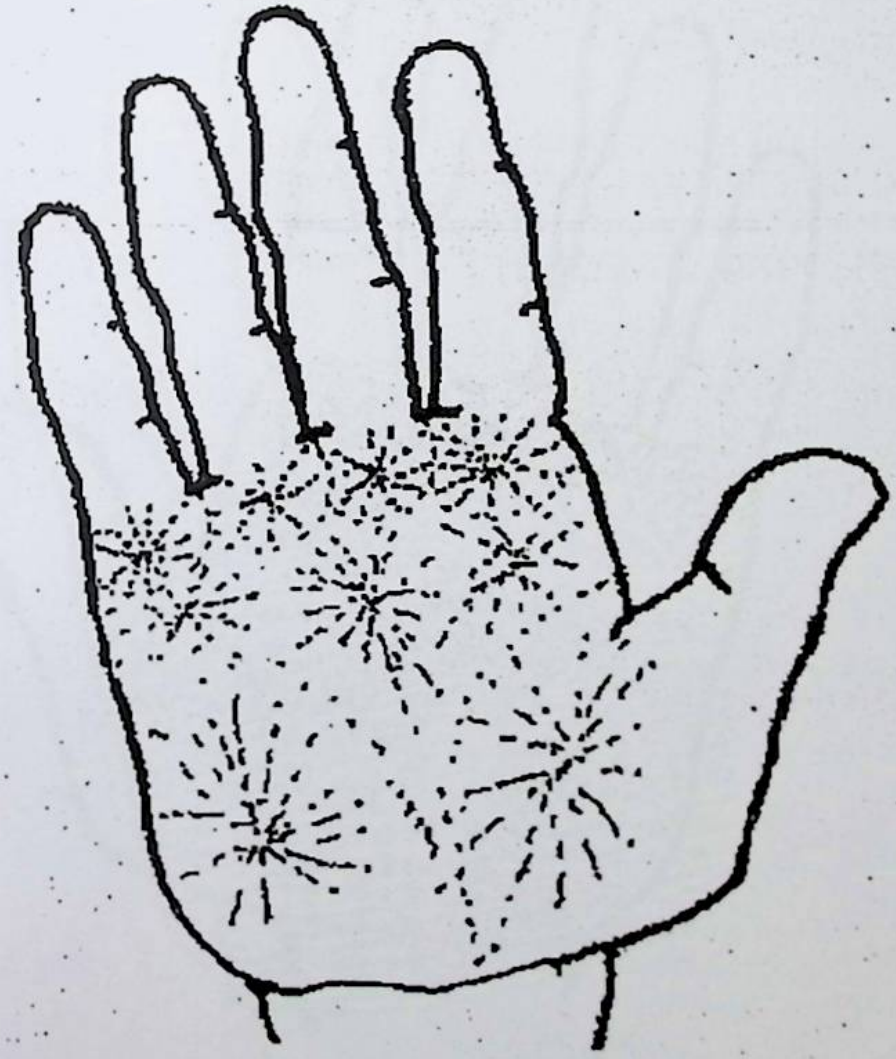

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फैले हुये सम पर्वत सामान्य कहे जाते हैं।

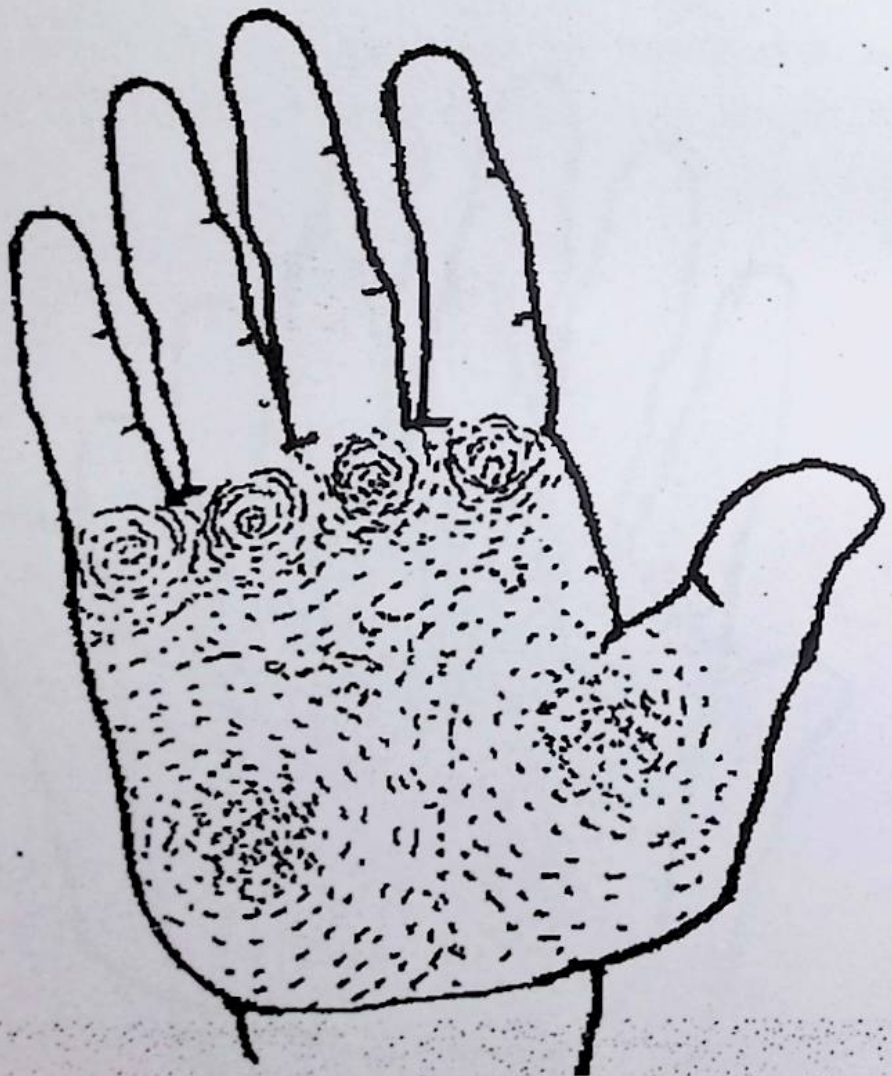

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार जो पर्वत दबे हुये रहते है वे उसकी निर्बलता को प्रकट करते है, अर्थात् उसकी विशेषताओं को पूर्ण रूप से अभाव पाया जाता है।

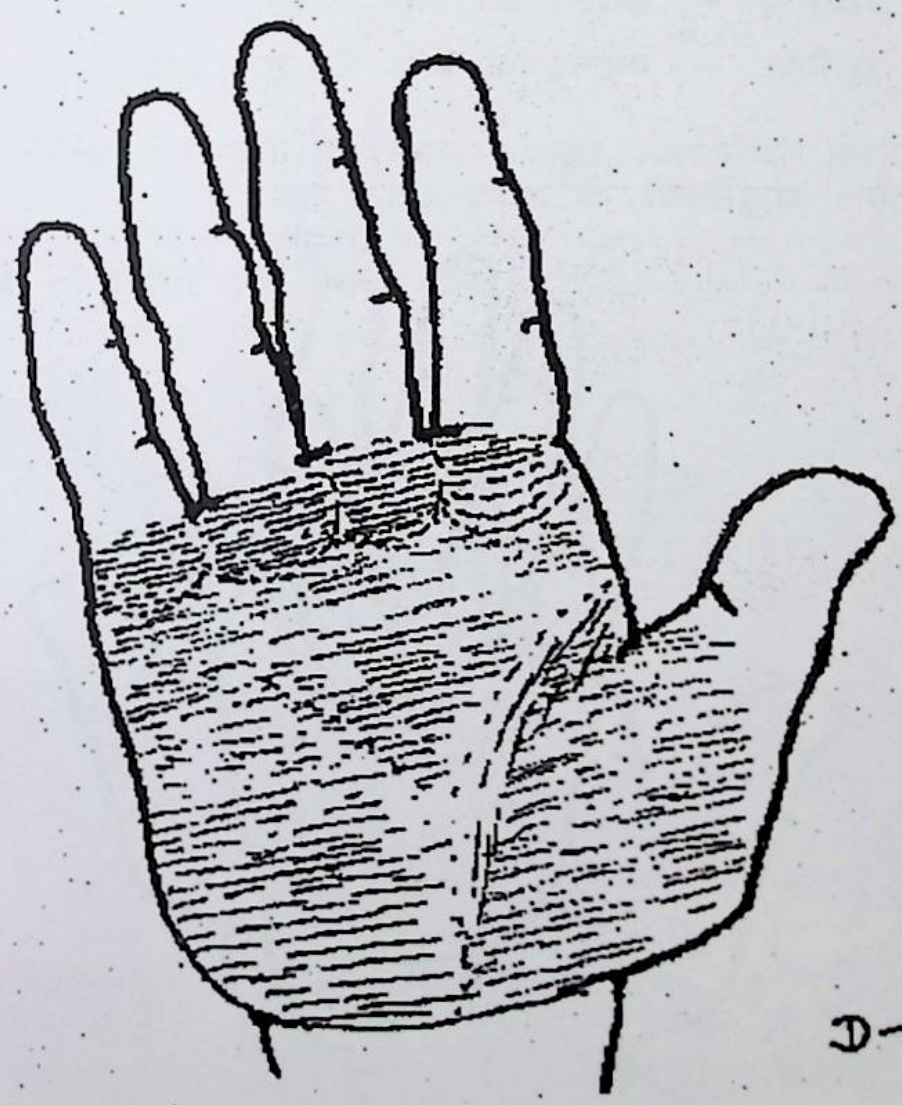

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसे विस्तृत रूप से समझने के लिये निम्न क्रम अनुसार अध्ययन करना चाहिये।

प्रथम – अंगुलियों के उदय स्थल
द्वितीय – हथेली का मध्य क्षेत्र
तृतीय – कलाई के जोड़ से जुडे क्षेत्र

प्रथम– अंगुलियों के उदय स्थल

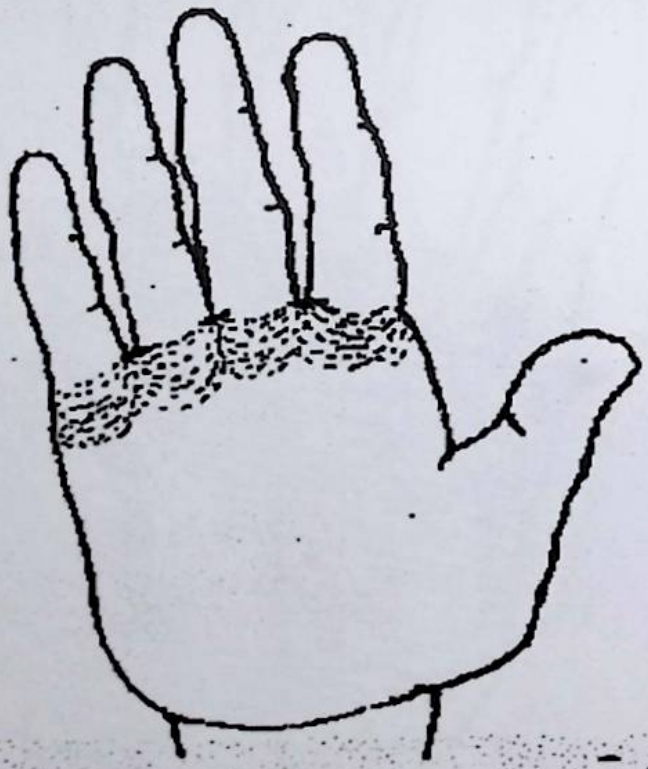

(अ) तर्जनी अंगुली

तर्जनी अंगुली के आधार पर गुरू पर्वत स्थित होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ब) मध्यमा अंगुली

मध्यमा अंगुली के आधार पर शनि पर्वत स्थित होता हैं।

(स) अनामिका अंगुली

अनामिका अंगुली के आधार पर सूर्य पर्वत स्थित होता है।

(द) कनीष्ठिका अंगुली

कनीष्ठिका, अंगुली के आधार पर बुध पर्वत स्थित होता है।

द्वितीय – हथेली का मध्य क्षेत्र

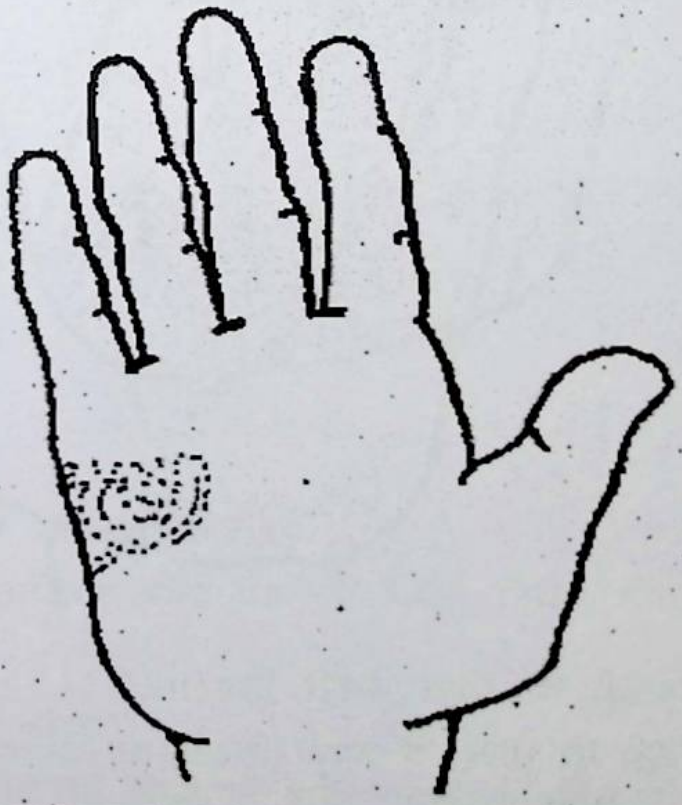

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(अ) अंतिम छोर

हथेली के अन्तिम छोर पर रक्षात्मक मंगल स्थित होता है।

(ब) हथेली का मध्य भाग

हथेली के मध्य भाग को मंगल का क्षेत्र कहते हैं।

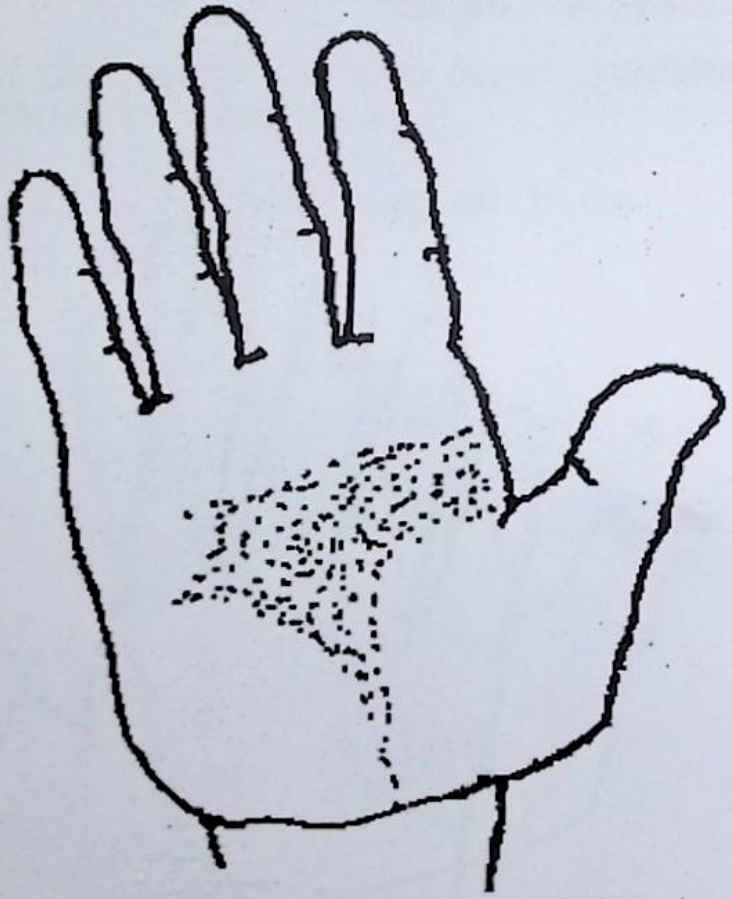

(स) अंगूठे के पास उपरी हिस्सा

अंगूठे के पास के उपरी हिस्से को आक्रामक मंगल का स्थान कहते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय – कलाई के जोड़ में जुडे क्षेत्र

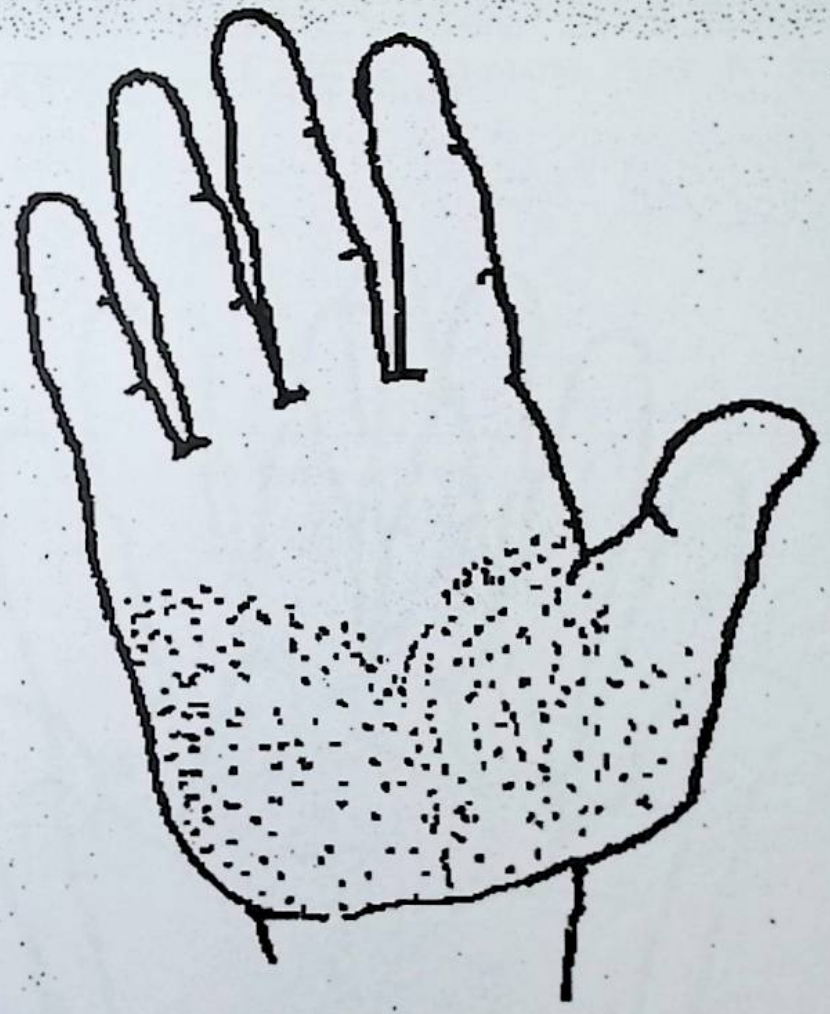

(अ) हथेली का अंतिम छोर

हथेली के अन्तिम छोर पर चंद्र पर्वत स्थित होता है।

(ब) अंगूठे के नीचे

अंगूठे के नीचे के भाग में शुक्र पर्वत का क्षेत्र होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वत की उचित स्थिति को जानना

हाथ की हथेली में पर्वतों के स्थान, उनकी जगह व क्षेत्र के बारे में स्थूल जानकारी उपरोक्त विधि अनुसार हैं।

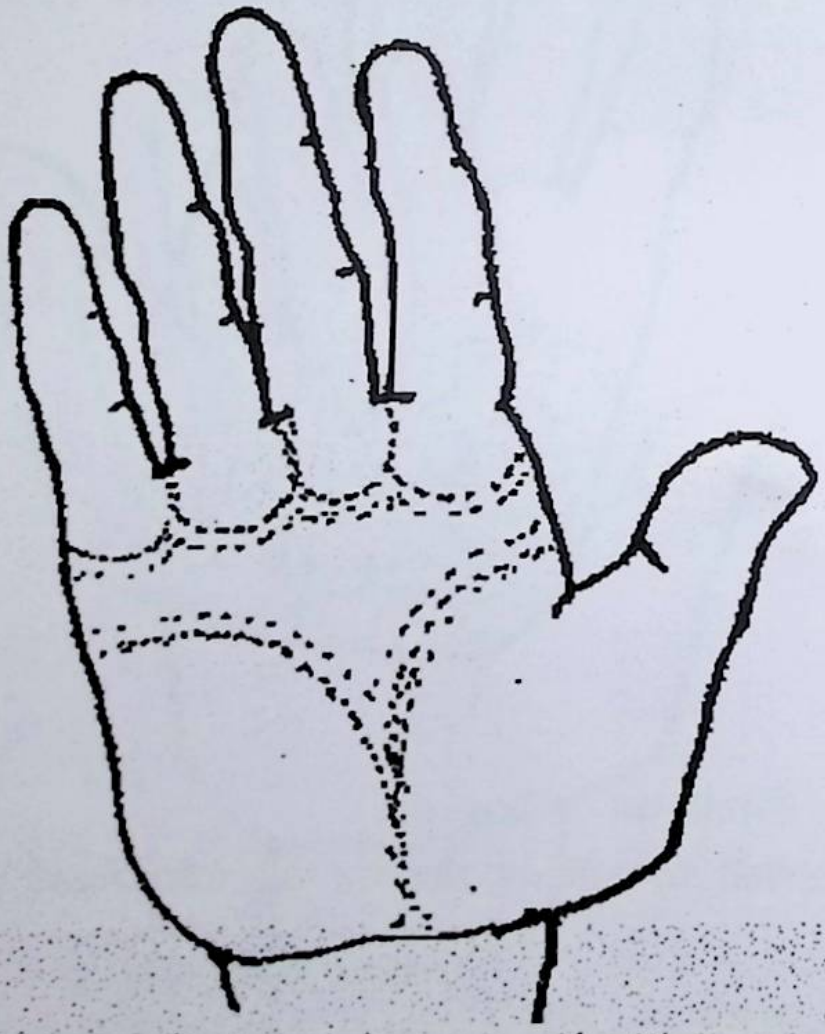

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनकी सूक्ष्म व सटीक स्थिति को जानने के लिये निरीक्षण निम्नानुसार पद्धति से करना चाहिये। स्थूल रूप से पर्वतों को उभार के आधार पर देखने पर जो स्थिति प्राप्त होती हैं वह वास्तविक नहीं होती।

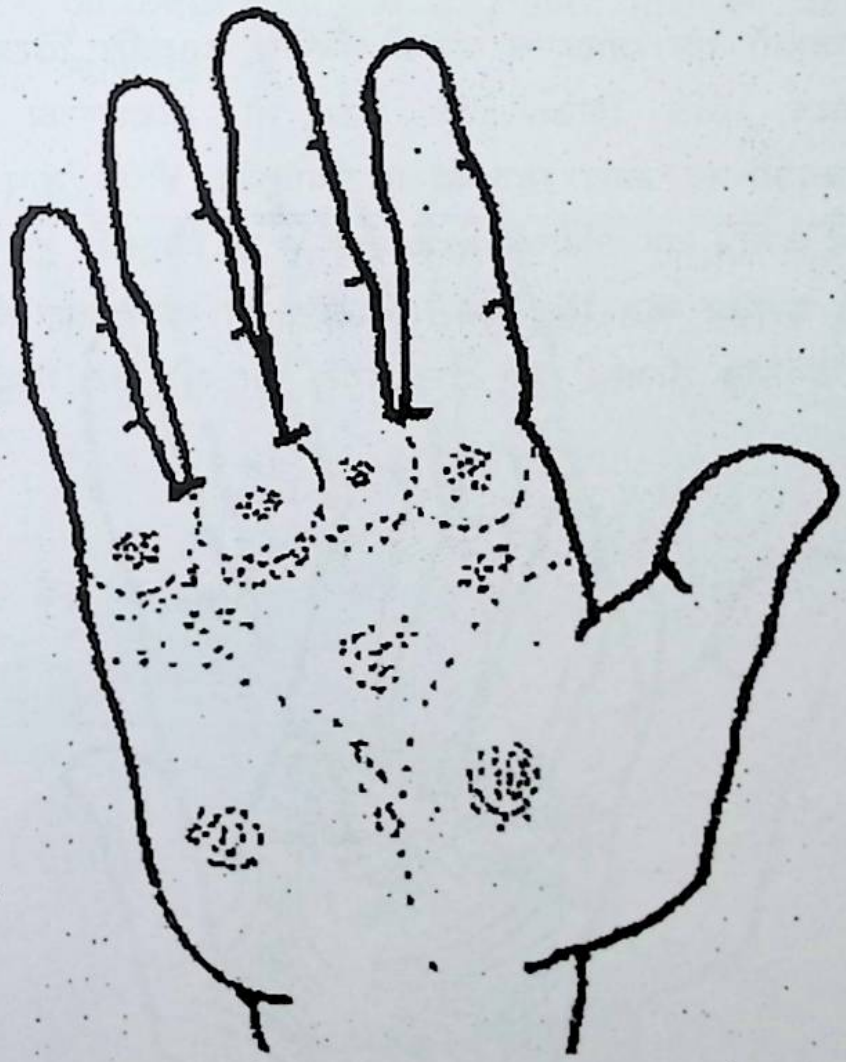

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसे सूक्ष्मता व सटीक प्रकार से जानने के लिये आवर्धक कांच का उपयोग करना चाहिये। आवर्धक कांच से हाथों की त्वचा का अध्ययन करना चाहिये। जिस पर्वत का सूक्ष्मता से अध्ययन करना हो वहां पर आवर्धक कांच से उस जगह का अवलोकन करना चाहिय। सूक्ष्म अध्ययन से कोशिकाओं का जाल व उनकी विशेष आकृति दिखाई देती है। जब पर्वत शिखर को देखे तो त्वचा की बनावट कोशिकाओं के साथ एक विशेष आकृति Y के रूप में हुई दिखाई देगी। यह अंग्रेजी के अक्षर Y से मिलती हुई आकृति होगी। इसका केंद्र बिंदु पर्वत शिखर को कोशिका की रचना का केंद्र बिंदु होगा। यही उस पर्वत का भी केंद्र बिंदु होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक हस्त रेखा शास्त्री के लिये यह जानना आवश्यक है कि पर्वतों का वास्तविक केंद्र बिंदु कहां हैं ? कोशिकाओं की संरचना से एक त्रिकोण आकृति बनती है इस त्रिकोण का मध्य बिंदु ही पर्वत क्षेत्र का मध्य बिंदु है। यह आवश्यक नही है कि यह बिंदु पर्व के मांसल भाग पर दिखाई दे। जिन्हें पूर्ण जानकारी नहीं है वे इसी उभरे भाग को पर्वत का मध्य बिंदु मान लेते है।

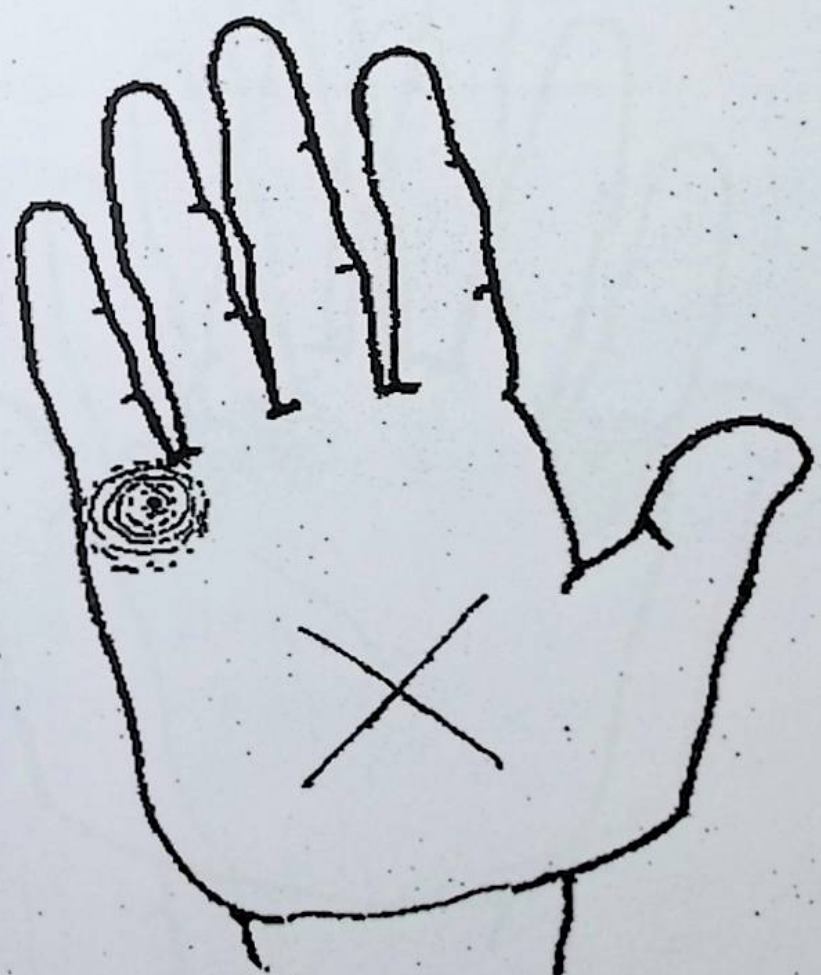

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह उचित नहीं है हमें तो कोशिकाओं के द्वारा निर्मित त्रिकोण (Y) के मध्य बिंदु को ही केंद्र बिंदु मानना चाहिये। यह कार्य काफी सूक्ष्मता से ध्यान पूर्वक करना चाहिये क्योकि यह पर्वत के गुणों व लक्षणों को परिभाषित करेगा।

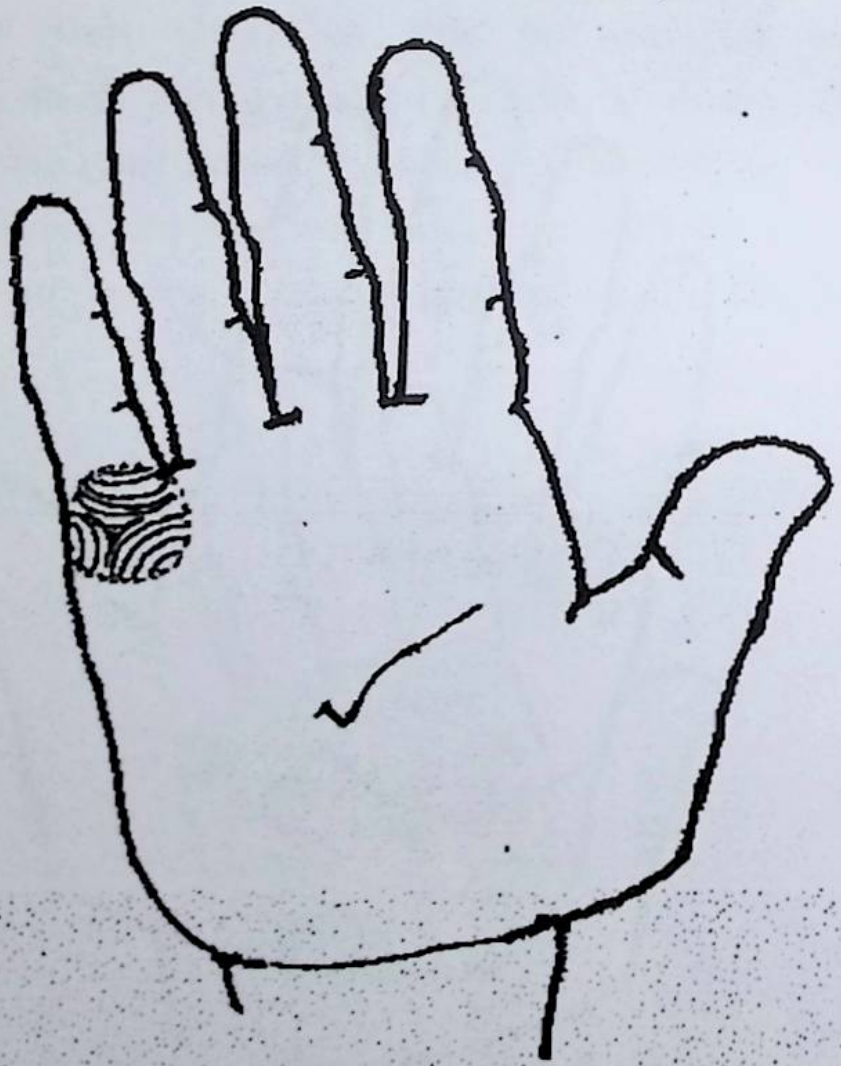

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्य रूप से यह केंद्र बिंदु पर्वत के मध्य में ही होना चाहिये । परन्तु यह पर्वत के शिखर पर हो तो व्यक्ति के उस पर्वत से संबंधित गुणों में वृद्धि करेगा। अगर नीचे हो तो स्वाभाविक गुणों में कमी आयेगी। यही केंद्र बिंदु किसी दुसरे पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो दूसरे पर्वत विशेष के गुणों के दबाव में रहेगा अर्थात् दूसरा पर्वत इससे अधिक दृढ़ होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य पर्वत क्षेत्र

हाथ की हथेली में तीसरे क्रम की अंगुली अनामिका के उद्‌गम स्थल पर सूर्य पर्वत का स्थान निर्धारित किया गया है। इसके एक ओर हथेली के अन्तिम छोर की तरफ बुध पर्वत स्थित है व इसके विपरीत, मध्यमा शनि पर्वत स्थित है।

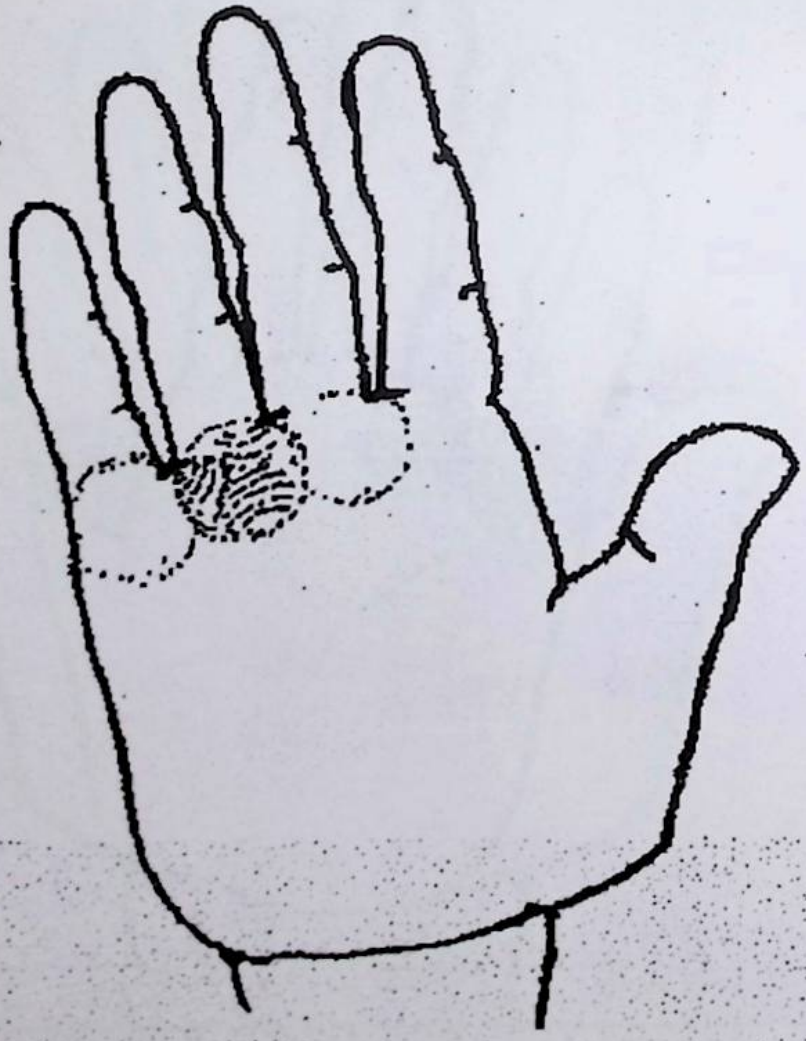

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसा की विदित है ब्रह्मांड में सूर्य की स्थिति एक पालन हार के रूप में है। जो इस चराचर जगत व सृष्टि का निर्माण भी करता हैं ठीक इसी गुणों को समाहित करता हुआ सूर्य पर्वत का स्थान है। सूर्य, पराक्रम, तेज, प्रकाश व बुराई को नष्ट करता है अर्थात् अंधेरे में जीवों की क्रियाशीलता भी नष्ट होती है। वहीं प्रकाश से नई सृष्टि का निर्माण होता है इसी प्रकार सूर्य पर्वत के विकसित अवस्था में रहने पर जातक में पराक्रम का उद्भव, व्यतिव का निर्माण, नेतृत्व की क्षमता का विकास होता है उसी प्रकार इसकी तीव्रता, स्वभाव को अति उत्साही स्वावलंबन तथा निष्ठुरता को बढ़ाती हैं। ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से प्राणी मात्र व्याकूल हो जाता है।

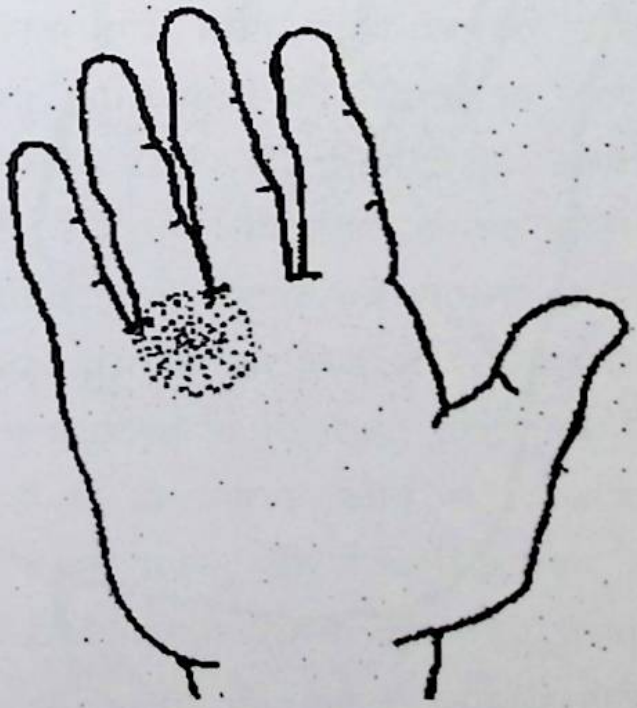

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसी प्रकार अति विकसित पर्वत, कठोरता व निष्ठुर भाव को बढाता है। हम इसके प्रभावों व अन्य ग्रहों के सामंजस्य के प्रभावों को विस्तृत अध्ययन करेगें।

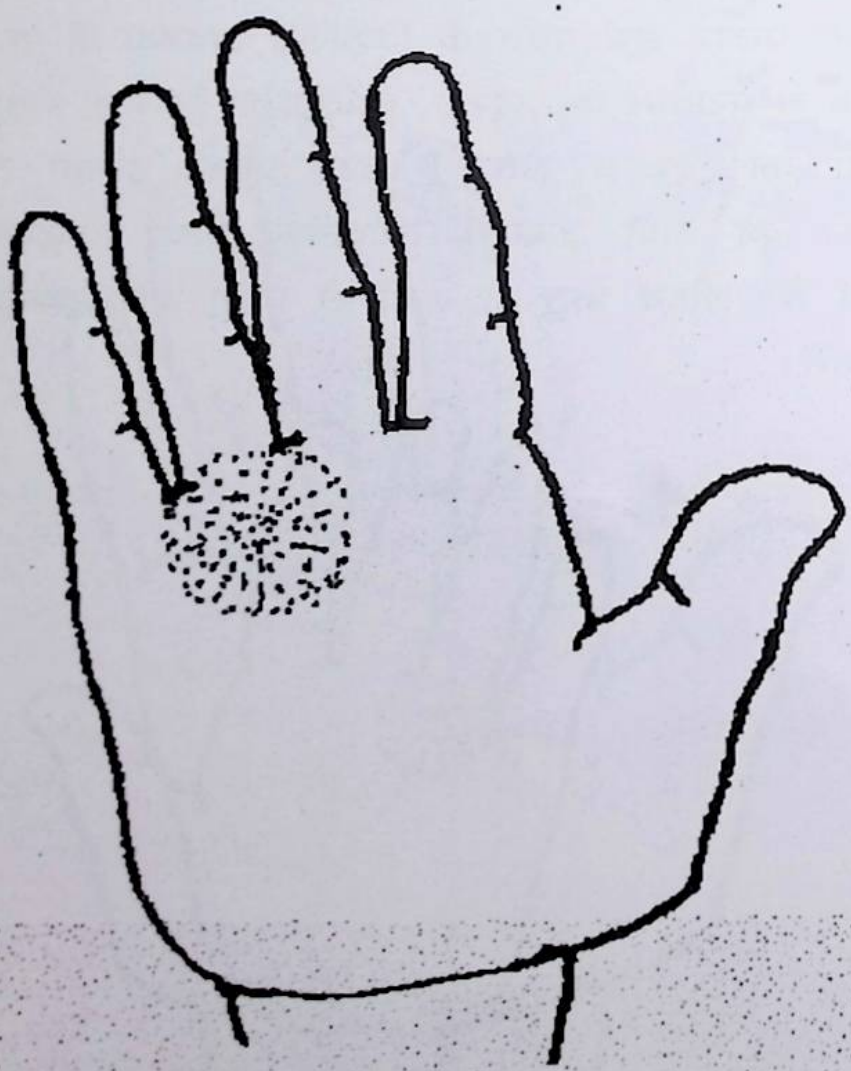

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रभाव :–

भारतीय हस्त शास्त्र में इसे शिक्षा का स्थान भी कहा गया है। क्योंकि इसके विकसित होने पर जातक अध्ययनशील व लगन के कारण विद्वान होता है व उच्च शिक्षा ग्रहण करता है। आवर्धक कांच द्वारा अनामिका के उद्‌गम स्थल पर पर्वत का केंद्र बिंदु ज्ञात करने पर यह जब विकसित अवस्था में दिखाई दे इस तरह के गुणों वाला जातक दिखावे वाला होता है। वह अपने को हमेशा ही अच्छे रूप मे ही सामने प्रकट करता है। इसके लिये वह अपने व्यक्तित्व को अच्छा बनाने के लिये, अच्छे परिधान पहनेगा उत्तम चरित्र रखेगा। ऐसे व्यक्ति किसी को नुकसान नहीं पहूंचाते, नही इनमें कोई अपराधिक प्रवृत्ति का विकास हो पाता है।

क्योंकि विकसित सूर्य पर्वत वाला जातक उत्साही व स्वस्थ होता है अतः अपने कार्य को चतुराई के साथ करता है। उसमें कलात्मकता रखता है। निराशा से इनका कोई वास्ता नहीं होता है। सूर्य पर्वत विकसित जातक को समझना थोड़ा कठिन है क्योंकि इनमें दिखावें की भावना अधिक होती है। अतः ये जातक अपने को हर क्षेत्र में माहिर समझते है तो सामने वाले को प्रकट होगा कि वस्तु विशेष का विशेषज्ञ हैं परन्तु ऐसा नहीं है ये जातक कोई बड़ें कलाकार या अभिनेता नहीं हो सकते परन्तु सौंदर्य प्रेमी अवश्य होते है। इनमें कोई नवीन या मौलिक रचना करने की क्षमता नही होती परन्तु प्रेरणा या नेतृत्व की क्षमता अवश्य होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य पर्वत

सूर्य पर्वत विकसित जातक स्वयं संजीदा होने से व्यापार व व्यवसाय में काफी सफल होते हैं क्योंकि नेतृत्व क्षमता वह भी सौंदर्य बोध के साथ इन्हें व्यवसायी करण में काफी सहायक होती हैं।

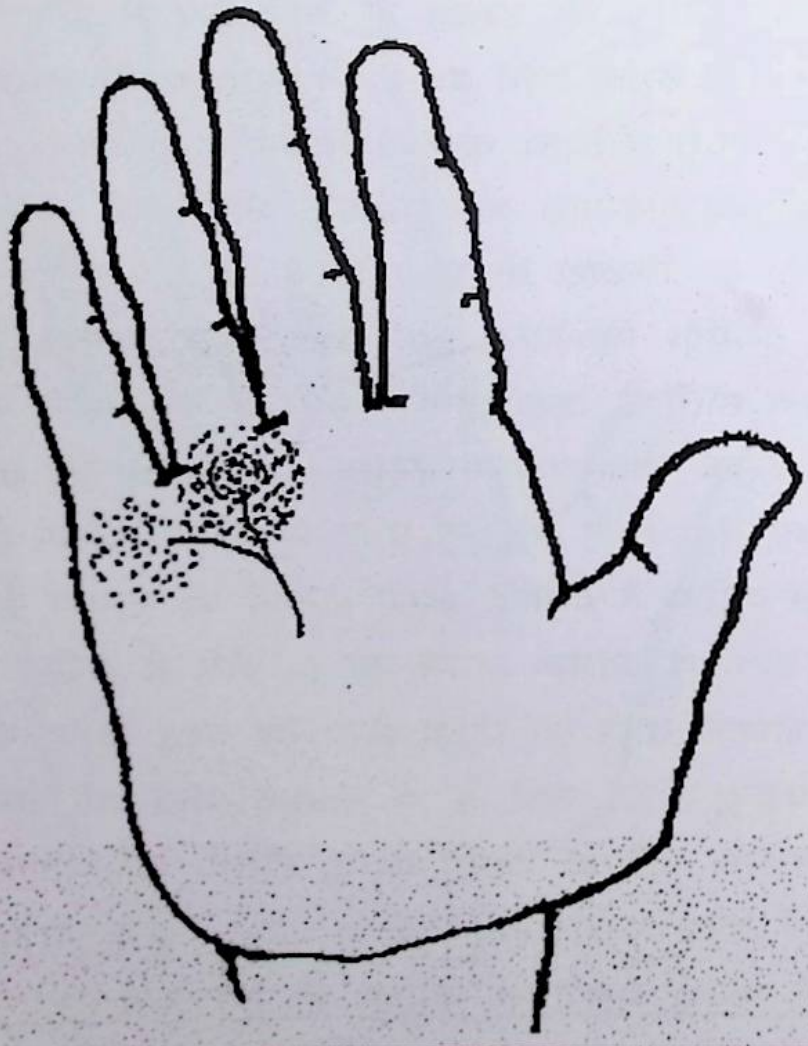

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवहारिक ज्ञान अधिक होने से काफी सरलता से सामने वालों को भांप लेते है व उसके अनुरूप कार्य करते है अतः सफलता सदैव उनके कदम चूमती है। विकसित सूर्य पर्वत का जातक क्षेत्र विशेष अर्थात् अगर खिलाड़ी या प्रशासनिक अधिकारी में सफलतम होते है।

इनका दिखावे में विश्वास व अच्छे परिधान पंहने से व्यक्तित्व काफी आकर्षक होता है इनके मित्र भी जल्दी बन जाते है व्यक्तित्व में खुलापन होता है। सभी धर्मो में सम भाव रखता है। बुद्धिशील होने से धर्म का अनुसरण करने वाला होता हैं।

अध्ययन शील व बुद्धि होने से बुराई व बुरे कार्यो में उलझते नहीं है। बनते कोशिश सरल रास्ता अपनाते है क्योंकि सफल होते है अतः धन उपार्जन इनके लिये कठिन नहीं होता हैं।

विकसित सूर्य पर्वत वाले व्यक्तियों का वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं होता क्योंकि सौंदर्य भाव व अपनी बात मनवाने की कोशिश में सामने वाले की भावना नही समझ पाते। अतः इस क्षेत्र में दुखी रहते है वे अपने जीवन साथी से काफी अपेक्षाएं रखते है जो पूर्ण नहीं हो पाती व परिणाम स्वरूप दुःख प्राप्त करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

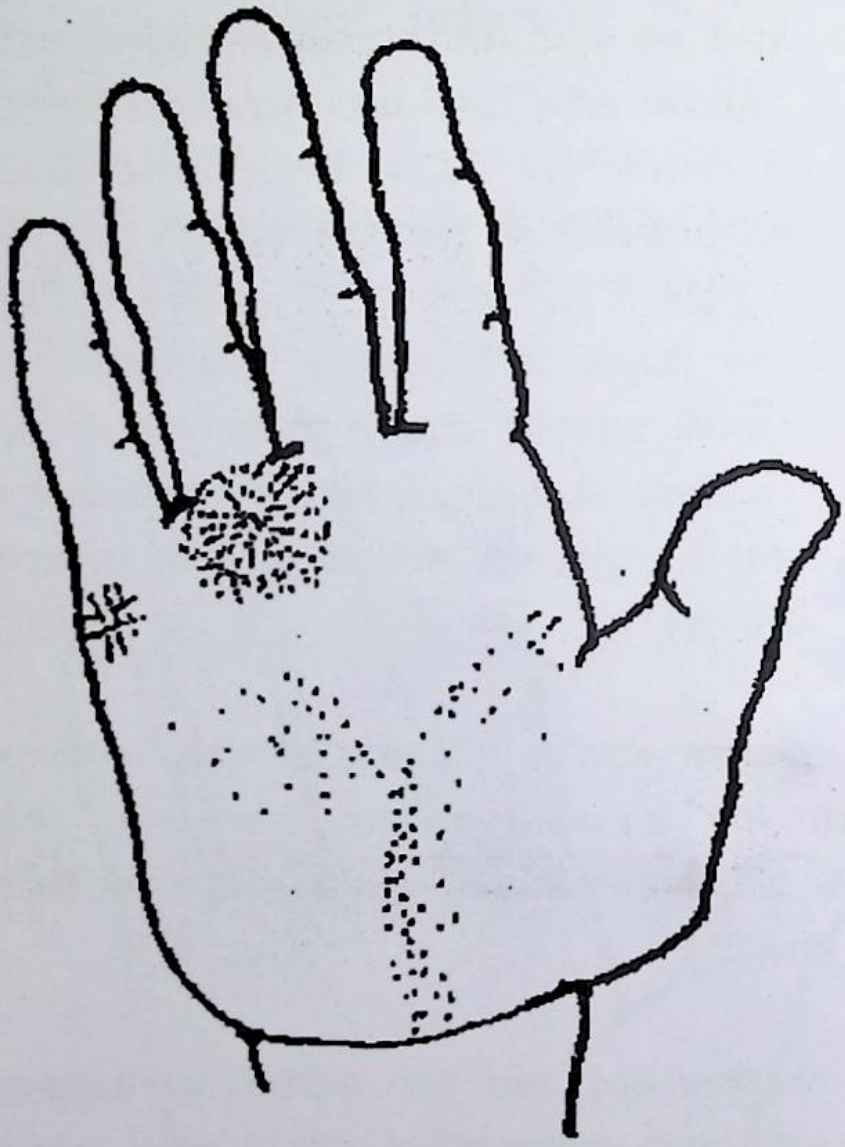

जैसा की हमने पहले भी बताया है की ग्रह विशेष के गुण उसकी विशिष्टता होते है। जैसे ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की तीव्रता प्राणी को व्याकुल कर देती है। उसी प्रकार सूर्य पर्वत पर विशिष्ट लक्षण जातक को कठोर निष्ठुर भी बनाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य पर्वत पर कोई चिन्ह हो अथवा अंगुलियां कठोर हों, लचक का अभाव हो तो जातक के गुणों में कमी हो जावेगी, हठी भाव, घमंड़ बढ़ जावेगा। जिससे जातक की कार्य कुशलता पर प्रभाव पड़ेगा व जीवन में सफलताओं की कमी हो जावेगी।

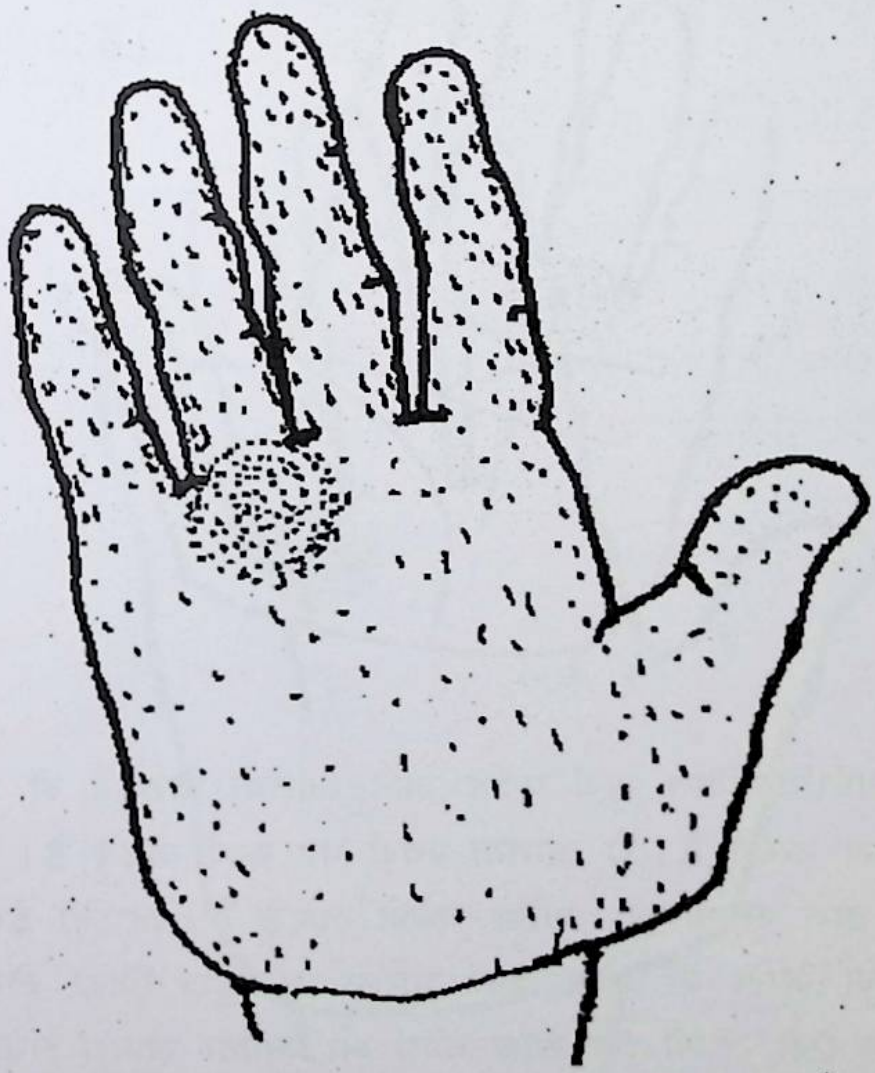

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्य रूप से विकसित सूर्य पर्वत का स्वामी स्वस्थ ही होता है परन्तु इस पर्वत की रेखाओं के साथ युक्ति, ह्रदय रोग व नैत्र रोग को बढ़ाती है। ऐसे जातक अपने निकट व आसपास के लोगों का भी हित ही सोचते हैं।

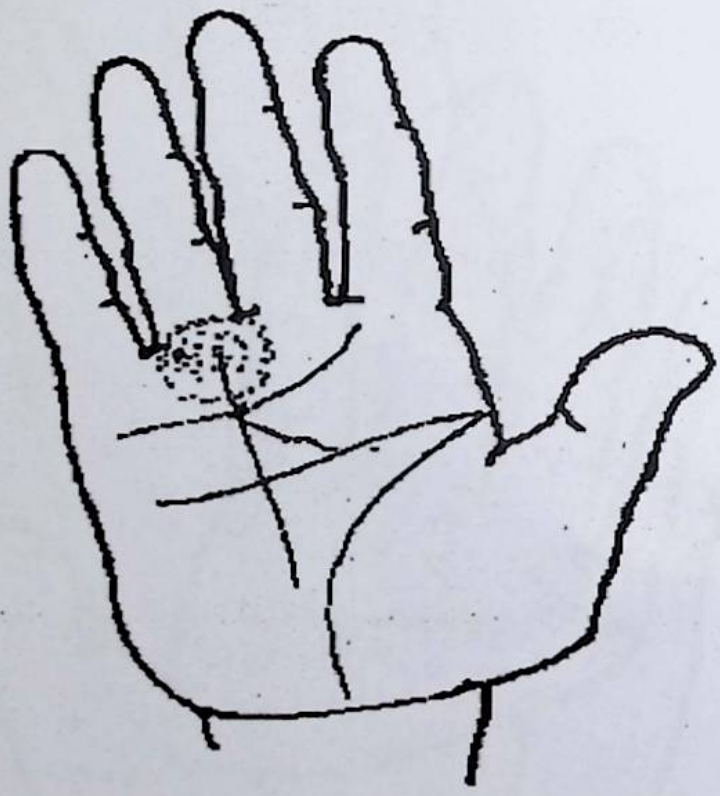

अतिविकसित सूर्य पर्वत वाले जातक दिखावें में ज्यादा विश्वास रखते है। ये जातक स्वयं पर खर्च करते है। विवेक शून्य होने से अपना अहित करने लगते है। अपनी इच्छाओं के मृग जाल में फंस कर अपना सबकुछ मिटा लेते हैं। क्योंकि ऐसे लोगों का साथ कोई भी ज्यादा समय तक नहीं दे सकता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब सूर्य पर्वत अविकसित अवस्था में हो अर्थात्, थोड़ा धंसा हुआ हो तो जातक में दिखावे का भाव नहीं होता वह सामान्य जीवन में मस्त रहते है वह अपनी दैनदनी को स्वाभाविक रूप में अपना लेता है ऐसे जातक धन उपार्जन को ज्यादा महत्व नहीं देता एक मध्यम श्रेणी में ही अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देते है। उपलब्धियों को कोई महत्व नहीं होता हैं।

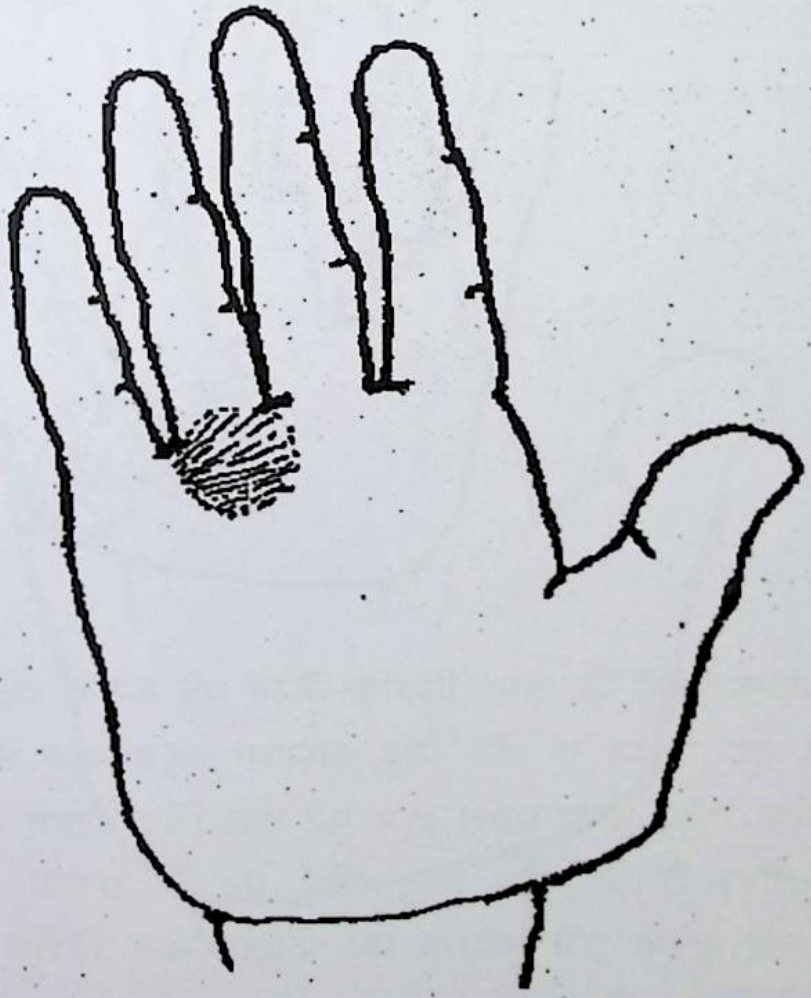

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समतल सूर्य पर्वत– जब अनामिका के उद्‌गम स्थल में समतल क्षेत्र हो तो जातक में विवेक भाव, संतुलित चरित्र, कोई भी बड़ी जोखिम उठाने की क्षमता का अभाव रहता है ऐसे जातक अध्ययनशील व शिक्षित वर्ग में आते है जीवन में कुछ सिद्धांत अपना लेते है उन्हीं में अपना जीवन व्यतीत कर देते है।

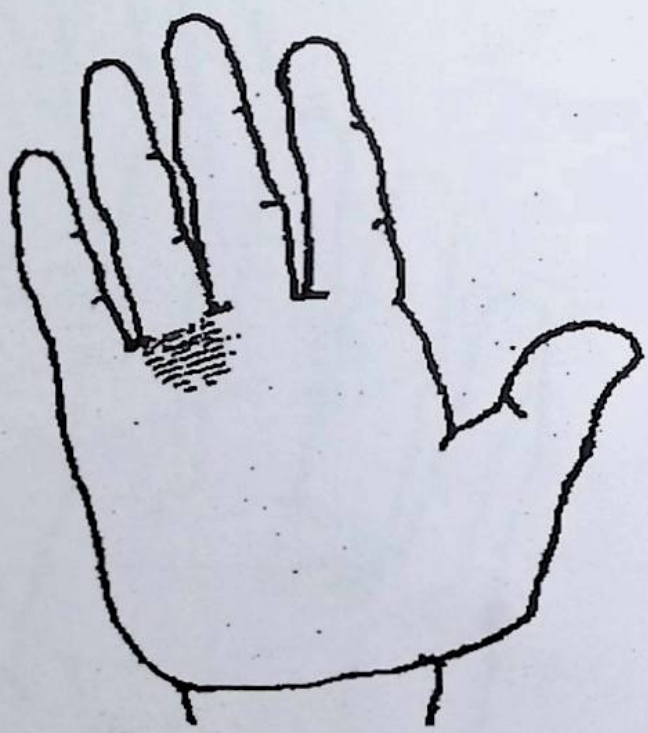

अन्य ग्रहों के साथ स्थिति–जैसा की हमने बताया है कि पर्वतों का स्थान व केंद्र बिंदु जानना आवश्यक है जब हम आवर्धक काँच द्वारा पर्वत क्षेत्र पर केंद्र बिंदु देखते है तब हमें ज्ञात होता है कि केंद्र बिंदु शीर्ष पर है अथवा साथ वाले पर्वत की तरफ तब जातक का फलित ग्रह विशेष कर गुणों को प्रभावित करेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य पर्वत की एक तरफ़ बुध पर्वत स्थित हैं आवर्धक कांच द्वारा देखने पर हमें केंद्र बिंदु विस्थापित हो बुध पर्वत की ओर मिलने पर जातक में सतर्कता व चपलता लाता हैं व्यक्तित्व व्यवहारिक बुद्धि को स्वामी होता हैं।

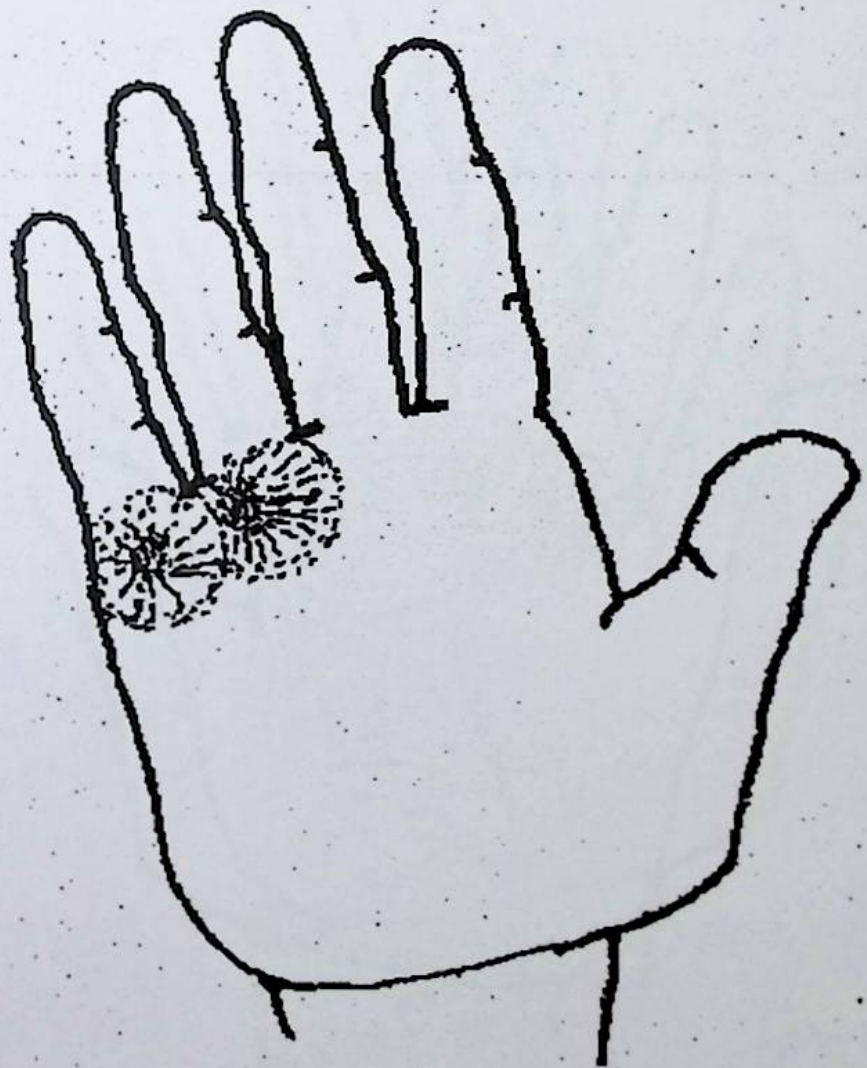

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य पर्वत की दूसरी तरफ शनि पर्वत की और केंद्र बिंदु का झुकाव उसमें शनि पर्वत के विशेष गुणों की तरफ इंगित करता है अर्थात् व्यक्ति हर कार्य को सोच समझकर करता है। जातक के दिखावे के भाव में कमी लाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्र क्षेत्र की तरफ झुकाव व्यक्ति विशेष को कलाओं व सौंदर्य बोध की तरफ ले जाता है व्यक्ति कला क्षेत्र में या संगीत के क्षेत्र में काफी नाम करता हैं।

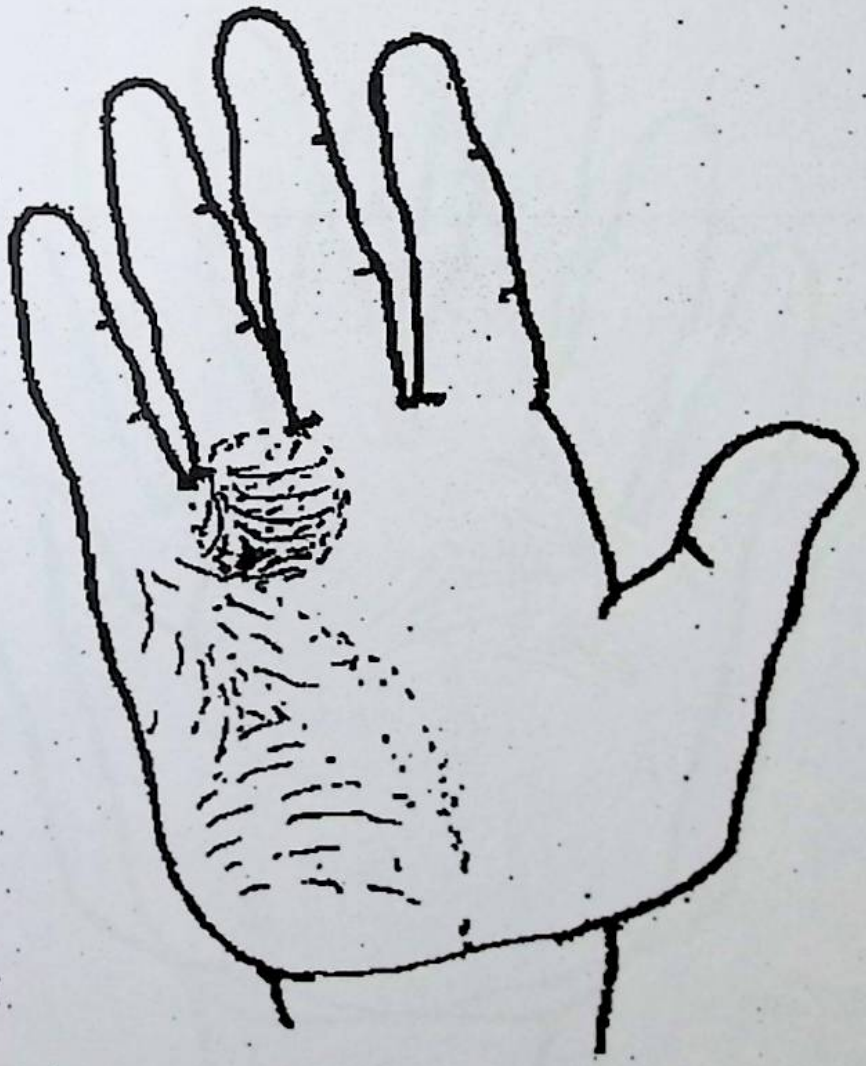

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार रक्षात्मक मंगल की तरफ झुकाव व्यक्ति में जल्दी कार्य पूर्ण करने की प्रवृत्ति व उतावलापन कम करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आक्रमक मंगल की तरफ झुकाव व्यक्ति के शारीरिक क्षमता को बढ़ाता है। जातक श्रमजीवी हो कार्य में सफलता अर्जित करता हैं।

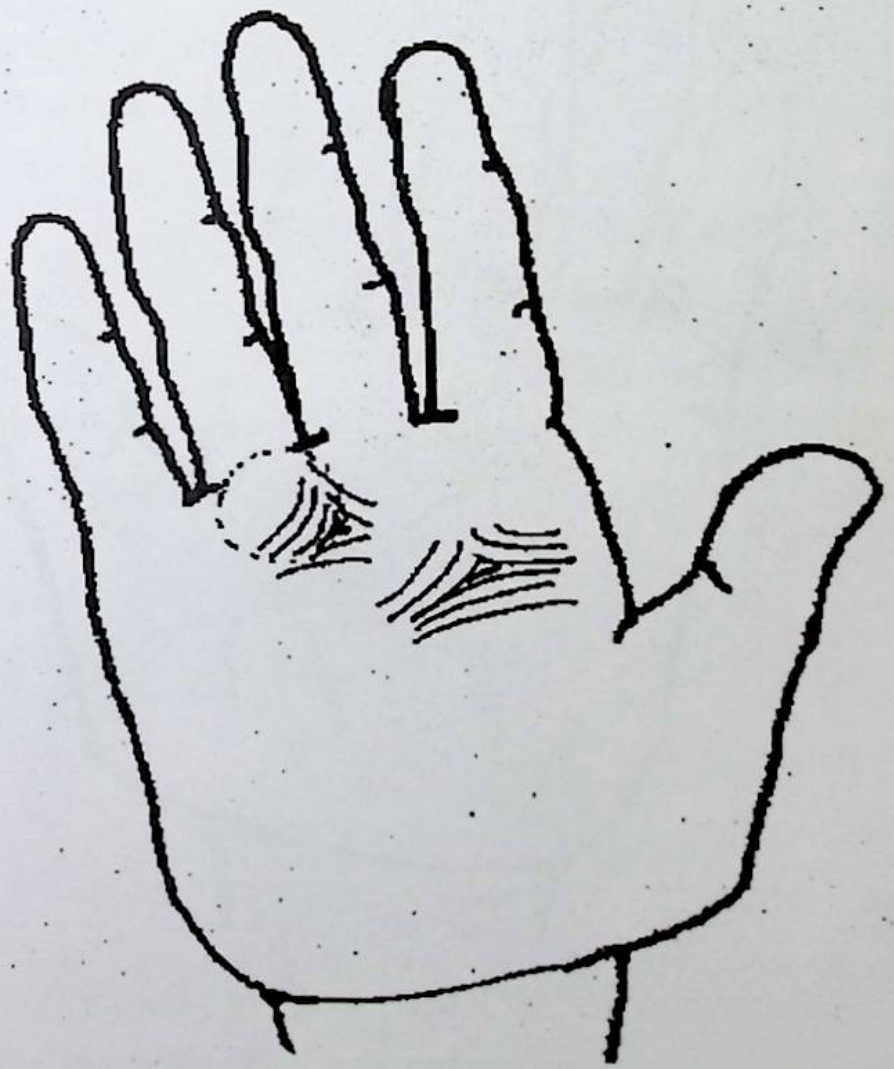

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र पर्वत के साथ होने पर काम भाव बढ़ाता हैं।

इस प्रकार साथ के पर्वत क्षेत्रों से मिलने पर पर्वत विशेष के गुणों व प्रभाव, सुप्रभाव सूर्य पर्वत के गुणों को प्रभावित करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू पर्वत

गुरू क्षेत्र का उद्गम स्थल तर्जनी अंगुली के आधार वाला हिस्सा है। हाथ में अंगुलियां इसका मुख्य स्थान है क्योंकि किसी भी कर्म विशेष को करने के लिये अंगूठे व तर्जनी की उपयोगिता मुख्य है इसके बिना किसी भी कार्य को करना संभव नही है। लेखन कार्य या भाव अभिव्यक्ति में भी अंगूठे व तर्जनी का योगदान लेना ही पड़ता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुरू पर्वत का क्षेत्र विचारों व भाव अभिव्यक्ति का हृदय स्थल है। समस्त सौर मंड़ल के ग्रह सदस्यों में गुरू ग्रह सबसे विशाल ग्रह हैं। इसको पृथ्वी पर रहने वाले का दर्जा दिया गया है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों पर इसका सर्वाधिक असर पड़ता हैं। भारतीय प्राचीन ग्रंथों में गुरू ग्रह को देवताओं के गुरू व इसे पितृ स्थान भी कहते हैं।

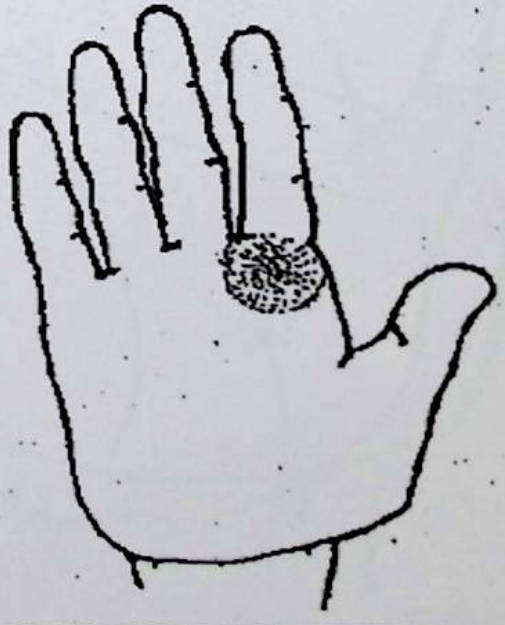

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसका सबसे अच्छा उदाहरण तो प्रायः यह महापुरूषों में देखने को आता है। गौर करने पर ही ज्ञात हो पाता है जैसे भारत के युग पुरूष गांधी, नेहरू, इत्यादि। विश्व नेतृत्व करने वाले लेनिन, माओं व इस प्रकार नेतृत्व क्षमता वाले महान मनुष्य जब नेतृत्व करने वाली मुद्रा में रहते थे तो इनका एक हाथ उठा हुआ होता था। इनका अंगूठा सीधा, तर्जनी तनी हुई एवं बाकी अंगुलियां करतल से समाहित रहती है। अर्थात् जब भी आवेश या उत्साह की बढ़ोतरी होती है तो तर्जनी की भूमिका प्रमुख रहती है अर्थात् गुरू क्षेत्र आवेशित रहता है। विचारों व भाव अभिव्यक्ति का मस्तिष्क से सीधा संबंध गुरू क्षेत्र से प्रकट होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संक्षेप में कहे तो गुरू का क्षेत्र मनुष्य की नेतृत्व क्षमता, उसकी आकांक्षाओं, विवेकशीलता, संकट में धैर्य क्षमता, उसकी आदर्शवादिता, कार्य व कर्म में ईमानदारी, धर्म के प्रति आस्था प्राकृतिक प्रेम जैसे जीवन के इन महत्वपूर्ण घटकों को बताता है।

गुरू क्षेत्र की प्रमुखता, विस्तार व प्रभाव को जानने के लिये अलग–अलग आधार पर विस्तृत जानकारी का अध्ययन निम्नानुसार हैं।

(अ) उन्नत गुरू क्षेत्र या गुरू प्रधान

तर्जनी अंगुली के नीचे वाला गुरू क्षेत्र अपनी सुविकसित अवस्था में मनुष्य को महत्वाकांक्षी बनाता है। ऐसे जातक में उत्साह की अधिकता रहती है। वह स्वयं कार्य परायण होता है ऐसे जातक आदर्शवादी होते है एवं अपने आदर्शो के अनुसार जीवन यापन करते है। ऐसे जातक विश्वास के लायक होते है। ये अपना आत्म सम्मान बढ़ाने के लिये सदैव अच्छे कार्य करते हैं। गलत कार्य करने की प्रवृत्ति इनमें कदापि नहीं होती है। गुरू जातक को स्वभाव से संचालन, नेतृत्व व कल्याणकारी कार्यो में प्रवृत करता है। धर्म के प्रति जातक आस्थावान रहता हैं। ऐसे जातक अधिकारी या प्रतिष्ठित पदों पर रहने के इच्छुक रहते है क्योंकि वहां उनके आदेशों का पालन होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसका सबसे अच्छा उदाहरण तो प्रायः यह महापुरूषों में देखने को आता है। गौर करने पर ही ज्ञात हो पाता है जैसे भारत के युग पुरूष गांधी, नेहरू, इत्यादि। विश्व नेतृत्व करने वाले लेनिन, माओं व इस प्रकार नेतृत्व क्षमता वाले महान मनुष्य जब नेतृत्व करने वाली मुद्रा में रहते थे तो इनका एक हाथ उठा हुआ होता था। इनका अंगूठा सीधा, तर्जनी तनी हुई एवं बाकी अंगुलियां करतल से समाहित रहती है। अर्थात् जब भी आवेश या उत्साह की बढ़ोतरी होती है तो तर्जनी की भूमिका प्रमुख रहती है अर्थात् गुरू क्षेत्र आवेशित रहता है। विचारों व भाव अभिव्यक्ति का मस्तिष्क से सीधा संबंध गुरू क्षेत्र से प्रकट होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संक्षेप में कहे तो गुरू का क्षेत्र मनुष्य की नेतृत्व क्षमता, उसकी आकांक्षाओं, विवेकशीलता, संकट में धैर्य क्षमता, उसकी आदर्शवादिता, कार्य व कर्म में ईमानदारी, धर्म के प्रति आस्था प्राकृतिक प्रेम जैसे जीवन के इन महत्वपूर्ण घटकों को बताता है।

गुरू क्षेत्र की प्रमुखता, विस्तार व प्रभाव को जानने के लिये अलग–अलग आधार पर विस्तृत जानकारी का अध्ययन निम्नानुसार हैं।

(अ) उन्नत गुरू क्षेत्र या गुरू प्रधान

तर्जनी अंगुली के नीचे वाला गुरू क्षेत्र अपनी सुविकसित अवस्था में मनुष्य को महत्वाकांक्षी बनाता है। ऐसे जातक में उत्साह की अधिकता रहती है। वह स्वयं कार्य परायण होता है ऐसे जातक आदर्शवादी होते है एवं अपने आदर्शो के अनुसार जीवन यापन करते है। ऐसे जातक विश्वास के लायक होते है। ये अपना आत्म सम्मान बढ़ाने के लिये सदैव अच्छे कार्य करते हैं। गलत कार्य करने की प्रवृत्ति इनमें कदापि नहीं होती है। गुरू जातक को स्वभाव से संचालन, नेतृत्व व कल्याणकारी कार्यो में प्रवृत करता है। धर्म के प्रति जातक आस्थावान रहता हैं। ऐसे जातक अधिकारी या प्रतिष्ठित पदों पर रहने के इच्छुक रहते है क्योंकि वहां उनके आदेशों का पालन होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

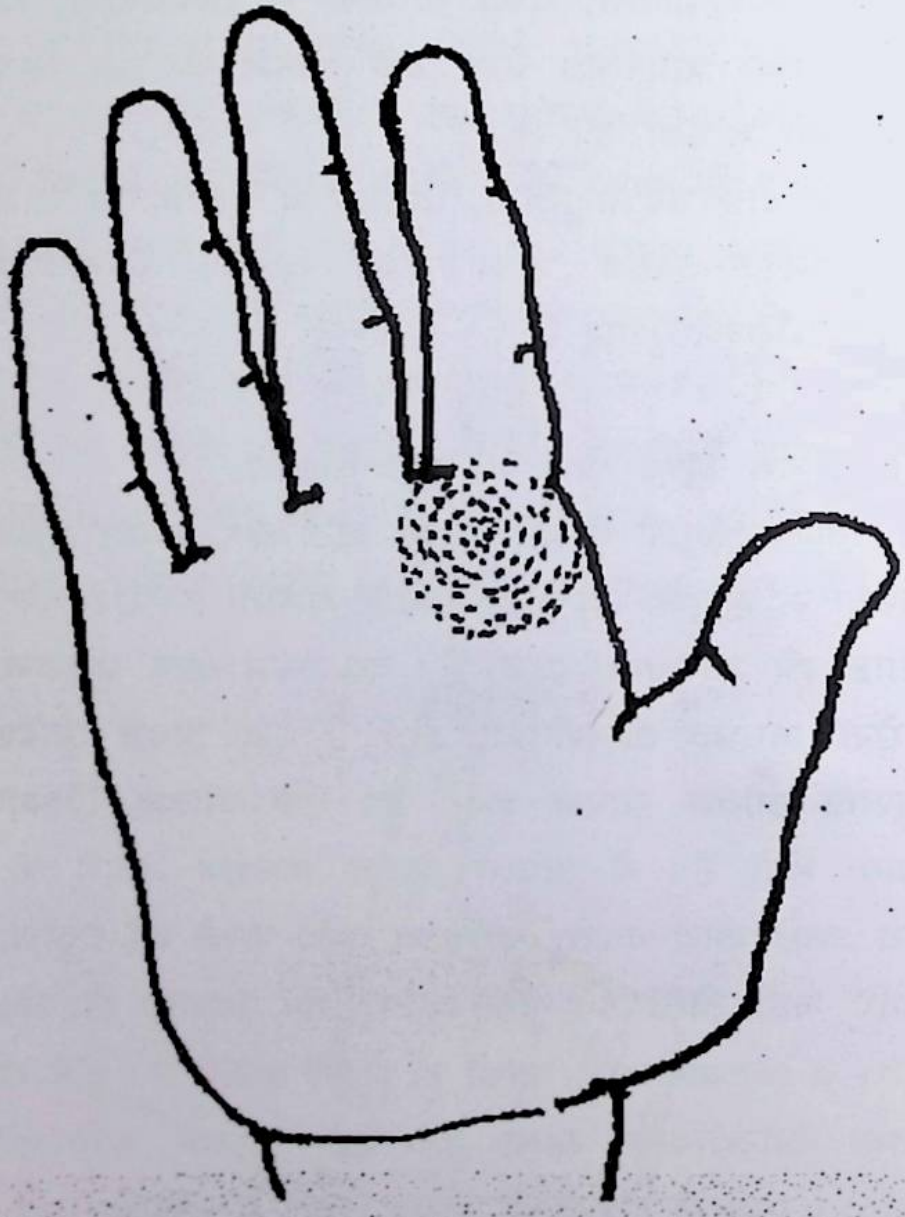

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने कुछ विशिष्ट गुणों के कारण गुरू प्रधान व्यक्ति थोड़े हठी और कठोर भी हो जाते है। अत्यधिक स्वाभिमान होने से वे अहंकारी भी हो जाते है। इनका वैवाहिक जीवन थोड़ा कष्ठकर रहता है क्योंकि जीवन साथी से ये जातक अपेक्षाएं बहुत अधिक रखते है। अतः जातक का उसकी पत्नी से प्रायः वैचारिक मतभेद रहता है। अतः जातक का दाम्पत्य जीवन मध्यम सुखी रहता हैं।

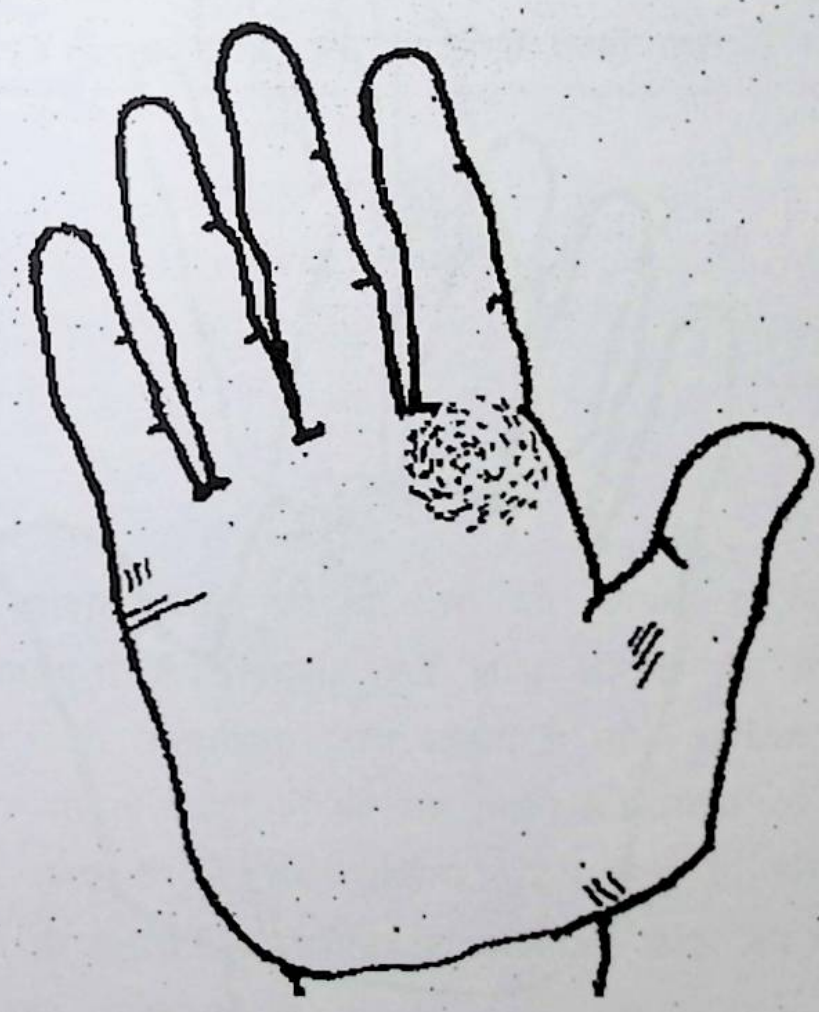

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू प्रधान जातक पर पैतृक गुणों का अत्यधिक प्रभाव रहता है। विवेकशील होने से कठिन कार्यो को भी जातक धैर्य से करता है। पुरानी रूढ़ियों को तोड़ नई विचार धारा को ये जातक महत्व देते है। दूसरों की अधीनता इन्हें स्वीकार नहीं होती है। जन कल्याण के लिये अपनी आर्थिक व शारीरिक शक्ति समर्पित कर देते है।

गुरू क्षेत्र पर क्रास या त्रिकोण इन्हें आध्यात्म की ओर मोड़ता है तथा दिव्य सिद्धियों की प्राप्ति करता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ब) अतिविकसीत गुरू क्षेत्र

सामान्यतया उन्नत गुरू क्षेत्र दोष रहित समझा जाता है क्योंकि उसमें गुरू के गुणों की प्रधानता रहती है। परन्तु असामान्य अवस्था मे गुणों में विकृतियां लाती है। अत्यधिक उन्नत गुरू क्षैत्र व्यक्ति में अहंकार बढ़ाता है जिससे जातक घमंड़ी हो जाता है एवं वह चापलूसी पसंद करता है।

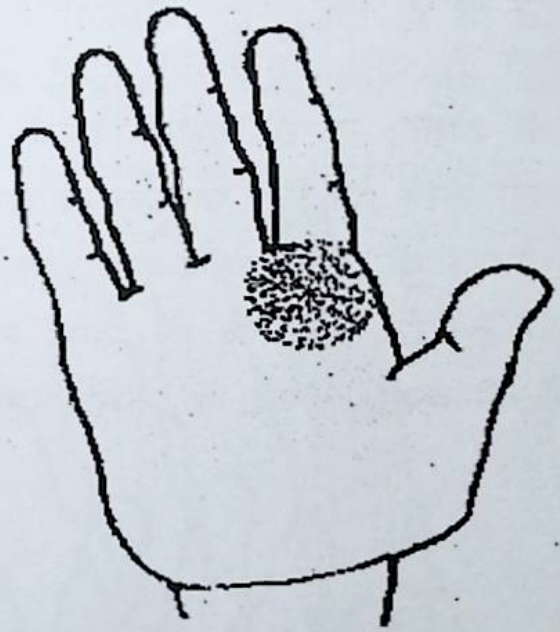

वह सामने वाले की योग्यता को नगण्य व खुद को योग्य समझता है। अपनी झूठी शान शौकत को बरकरार रखने के लिये अत्यधिक व्यय करता है और आर्थिक संकट में पड़कर गलत कार्यों में भी पड़ जाता है। अत्यधिक उन्नत होने पर जातक में हठ धर्मिता बढ़ जाती है और वह तानाशाह हो जाता है। नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस का शासक इसका श्रेष्ठ उदाहरण था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(स) अविकसित या धंसा हुआ गुरू क्षेत्र

तर्जनी के मूलस्थान का दबा होना या संकीर्ण होना जातक की मूल प्रवृत्तियों पर प्रभाव ड़ालता है। इससे उसकी कर्मठता, नेतृत्व करने की क्षमता, मन में उत्साह, इत्यादि पर प्रभाव पड़ता है। ऐसा जातक ख्यालीराम बन कर रह जाता है क्योंकि किसी भी कार्य की परिणती तक ये कभी नहीं पहुंच जाते है अतः असफल रहते है। इनमें कार्य निश्चिंतिता नही होती। न ही इनके कार्य करने की कोई व्यवस्थित प्रणाली होती है। ऐसे जातक में धर्म के प्रति रूचि नहीं होती है। स्वार्थ बुद्धि की अधिकता इनके विवेक व धैर्य को कम करती है। ऐसे जातक में कोई महत्वकांक्षा नहीं होती। ये लोगों की नकल करने में अपना पूर्ण जीवन व्यतीत कर देते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हथेली के अन्य गुणों, जैसे रेखाओं, त्वचा, मृदुता, अंगुलियों के प्रकार के आधार पर गुणों व अवगुणों में अधिकता और कमी आती है। ये निम्न हैं :-

1. तर्जनी की लंबाई

प्रथम अंगुली तर्जनी की हथेली पर स्थिति, जैसे यदि तर्जनी की लंबाई सामान्य हो, छोटी हो या बड़ी हो तो उसी के अनुसार गुरू क्षेत्र में सकारात्मक गुण बढ़ जायेंगे।

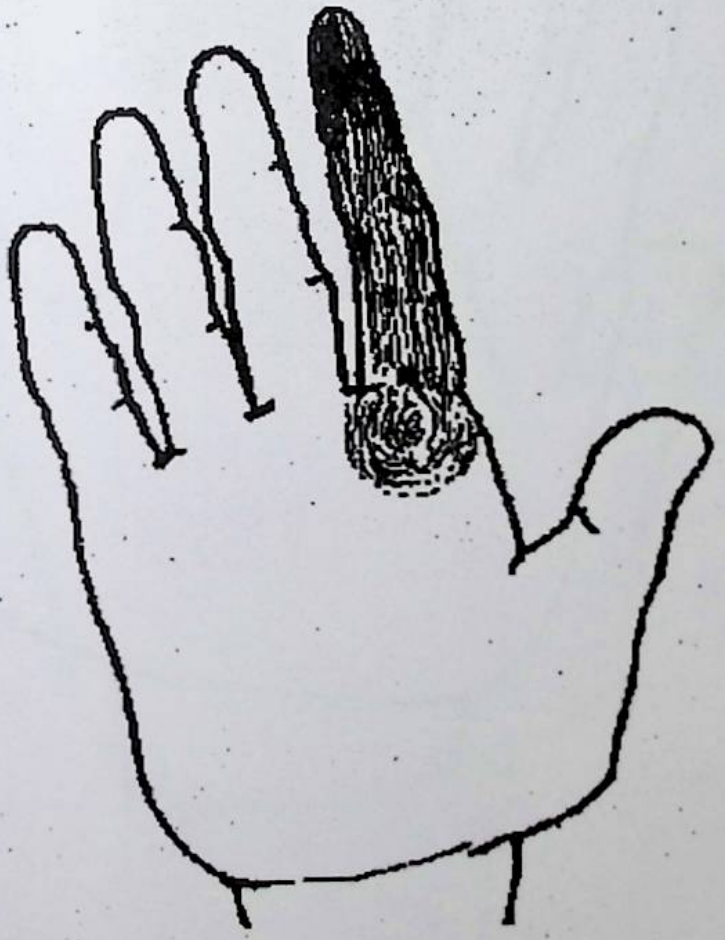

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोटी होने पर गुणों में कमी आ जायेगी।

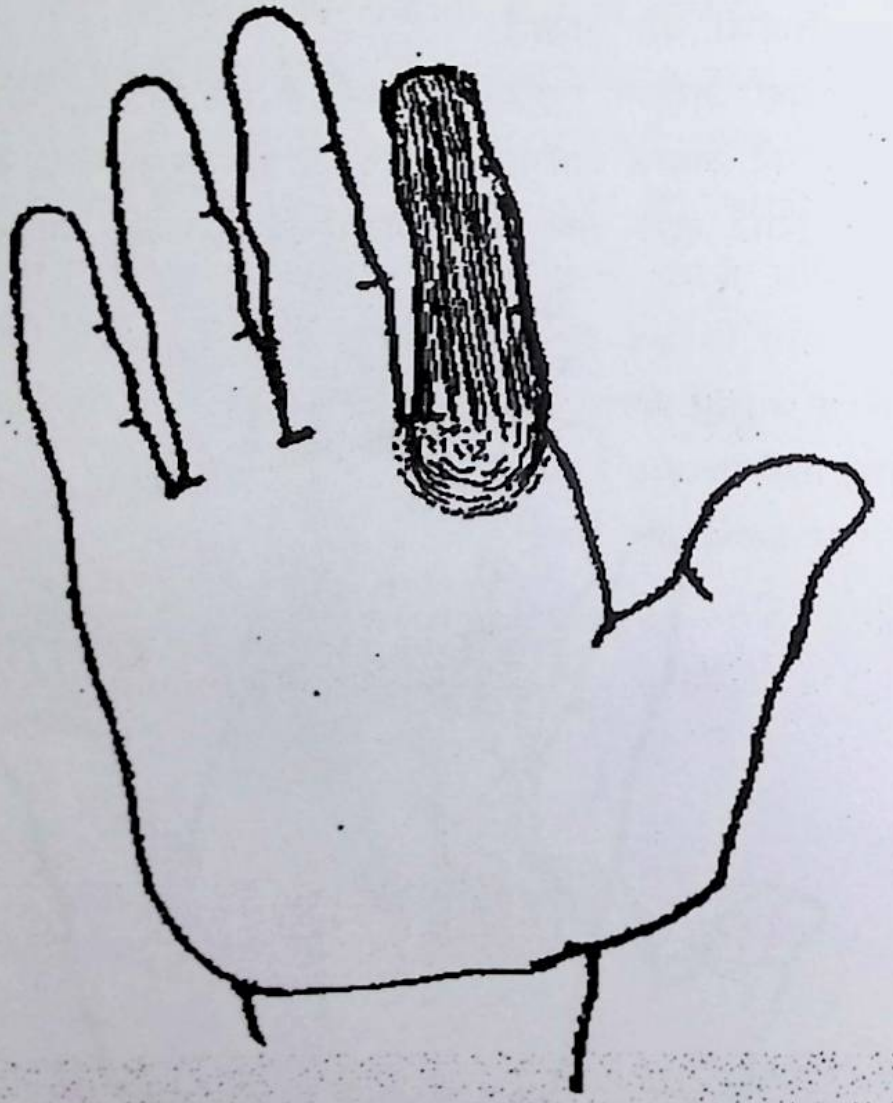

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. अन्य पर्वतों के साथ सांमजस्य

गुरू पर्वत क्षेत्र के साथ लगे हुए पर्वत क्षेत्रों की स्थिति से भी गुरू क्षेत्र के गुणों पर प्रभाव पड़ता है। जैसे गुरू क्षेत्र से लगा हुआ शनि पर्वत भी विकसित है।

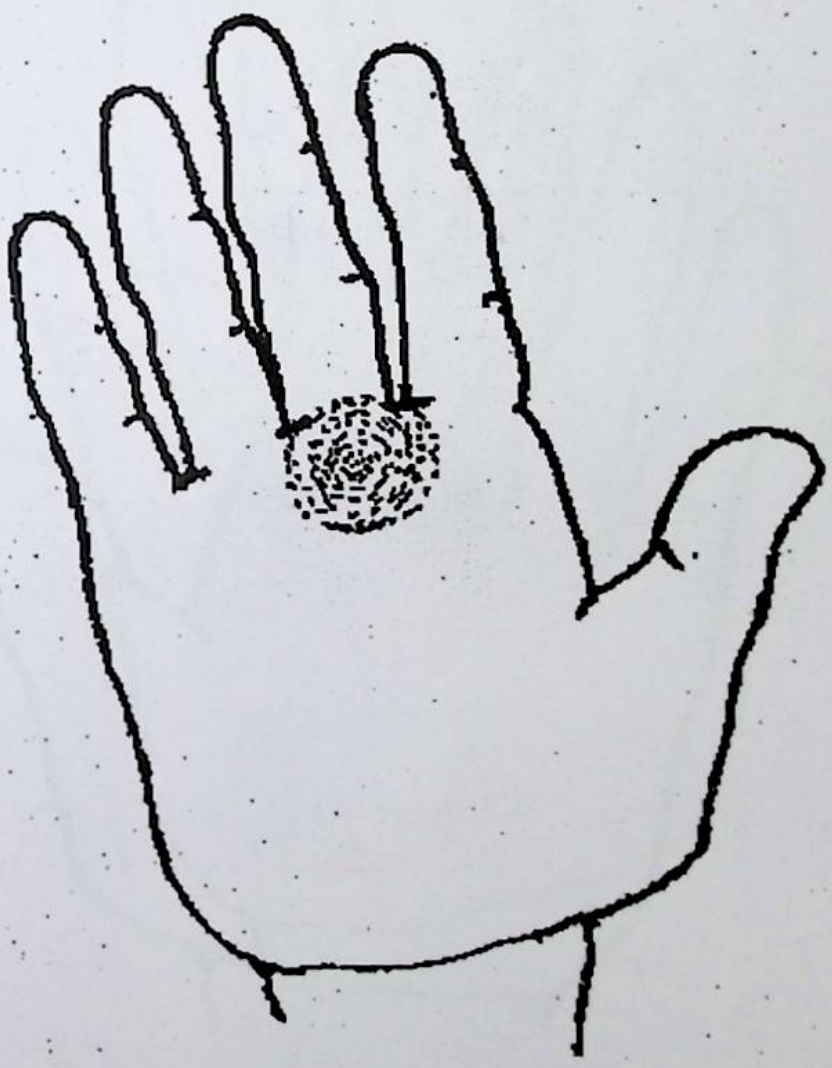

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यमा अंगुली की लंबाई अधिक हो तो गुरू के गुणों पर प्रभाव पड़ेगा। इससे जातक के अहं में कमी आयेगी। जातक की हठ धर्मिता कम होगी।

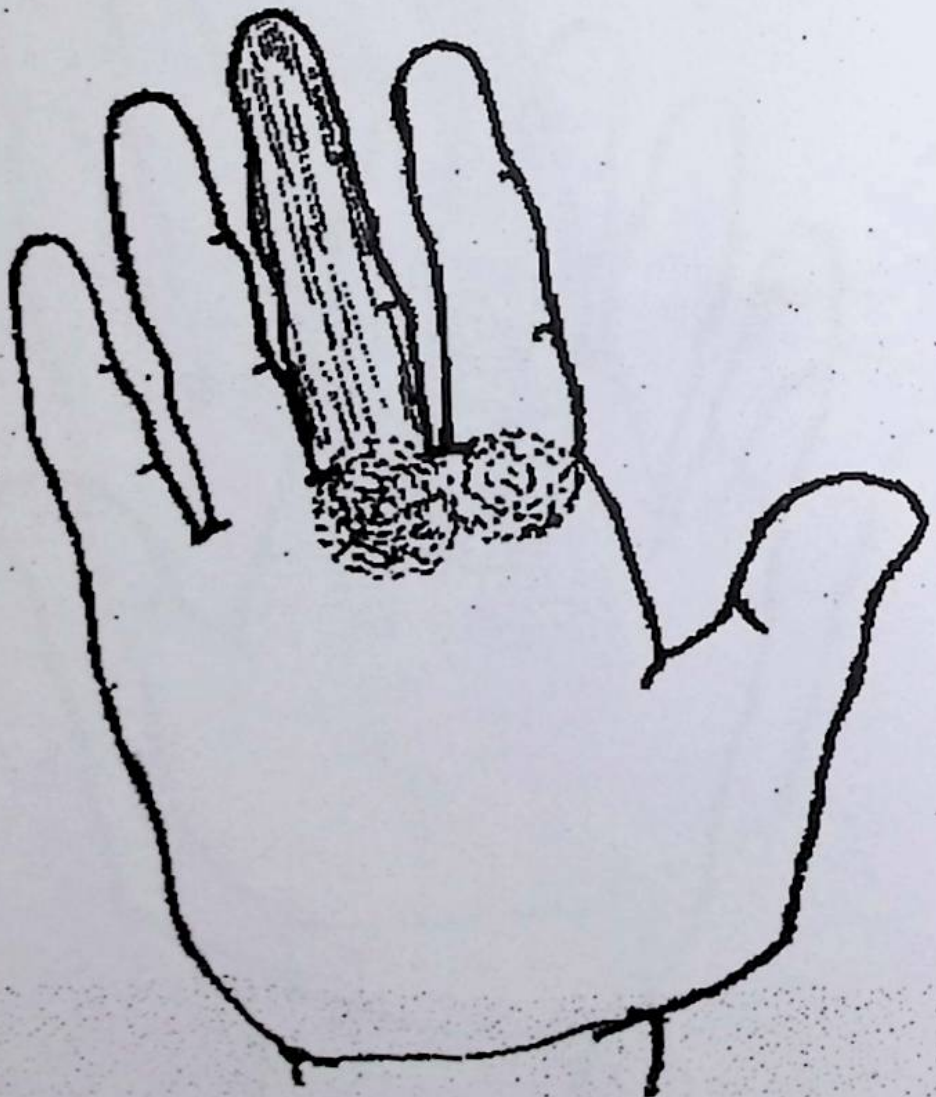

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार सूर्य पर्वत क्षेत्र के विकसित होने पर, गुरू के नेतृत्व गुणों को बल मिलने से यश की प्राप्ति होती है।

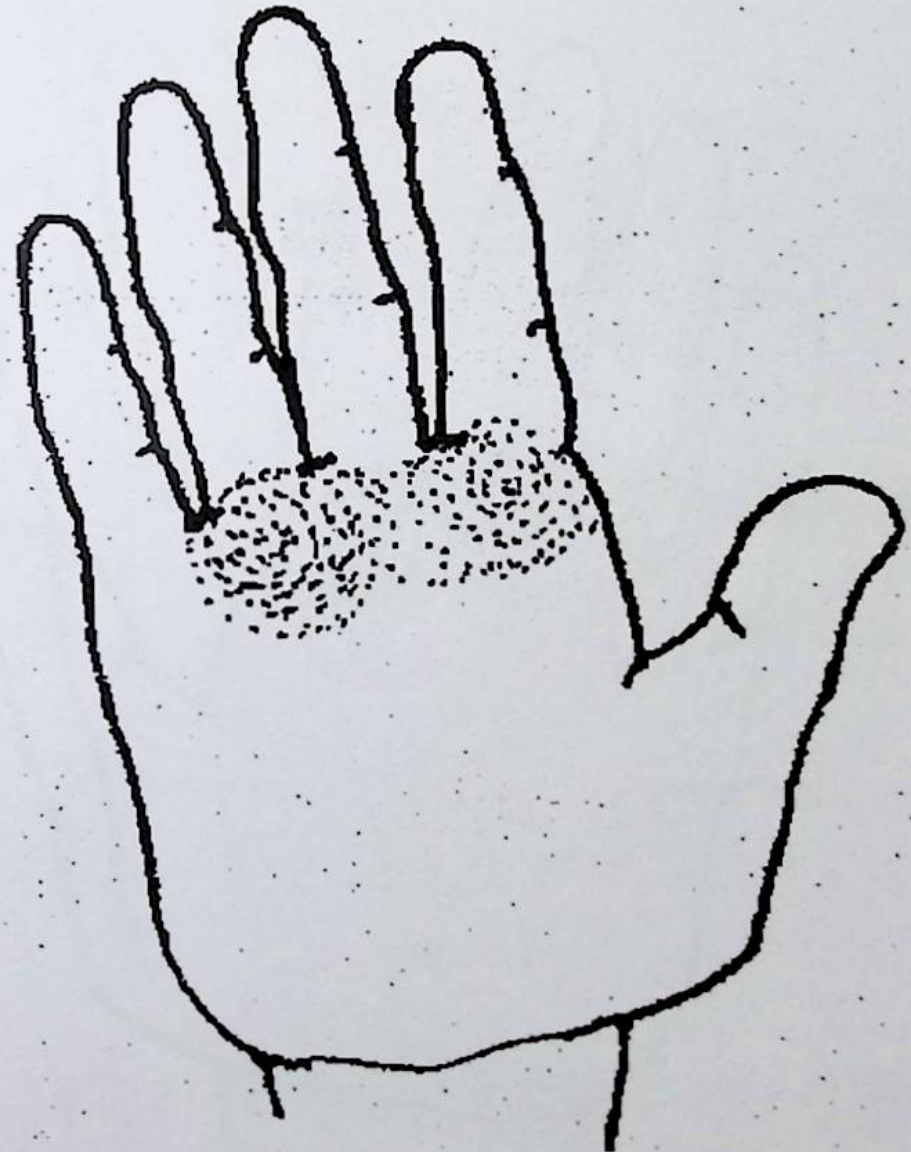

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध पर्वत क्षेत्र के विकसित होने पर जातक में आदेशों के प्रति कोई लगाव नहीं रहेगा एवं उसमें स्वतंत्रता की भावना बलवती होगी।

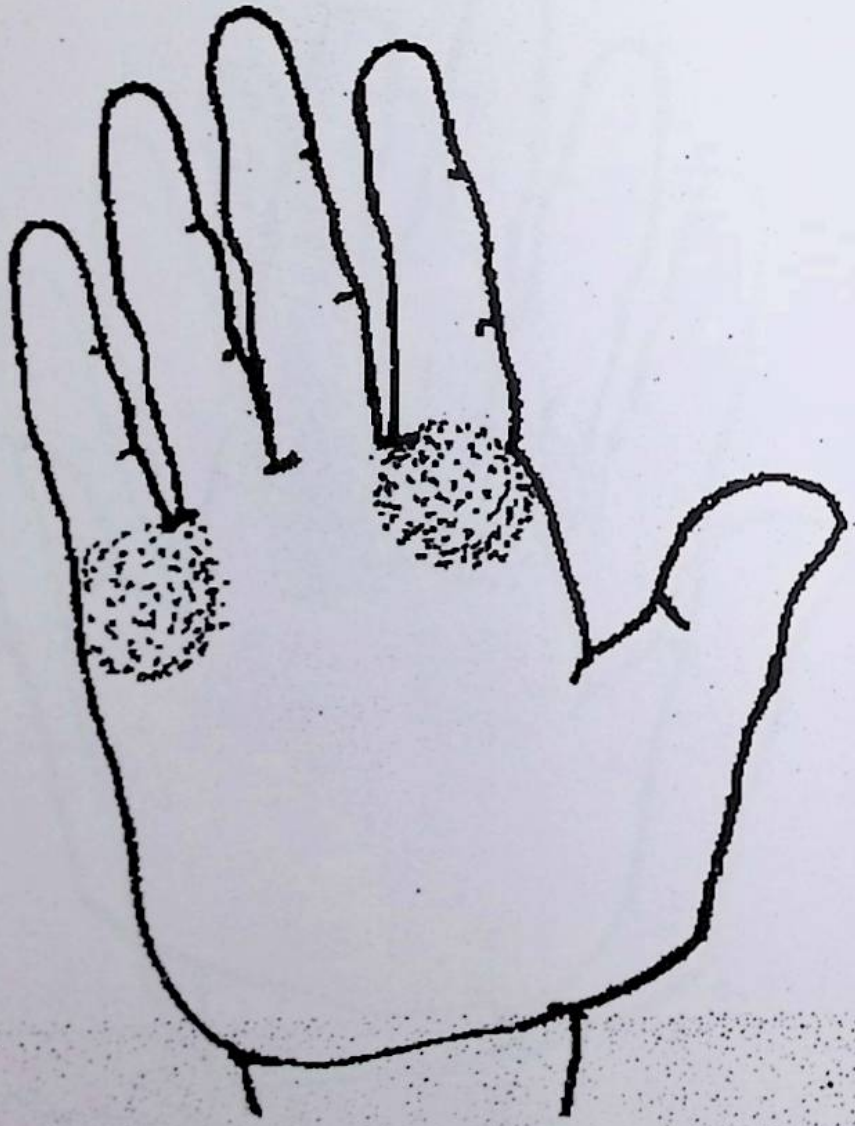

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र क्षैत्र के उन्नत होने पर व्यक्ति सौंदर्य बोध वाला एवं सदैव प्रसन्नचित्त रहता हैं।

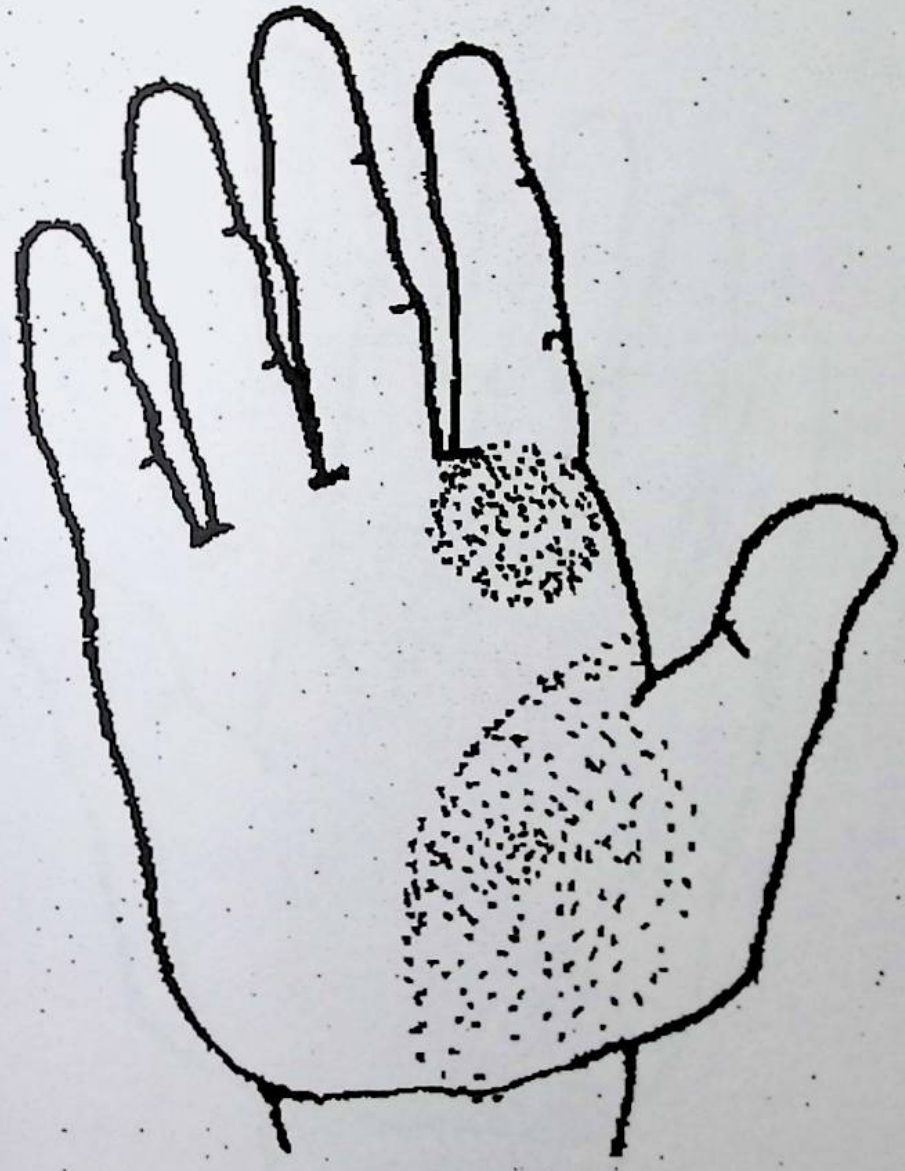

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार चंद्र क्षेत्रों में विकसित होने से जातक में कला क्षेत्रों में विशेष रूचि रहती है तथा इस क्षेत्रों में अग्रणी रहता हैं।

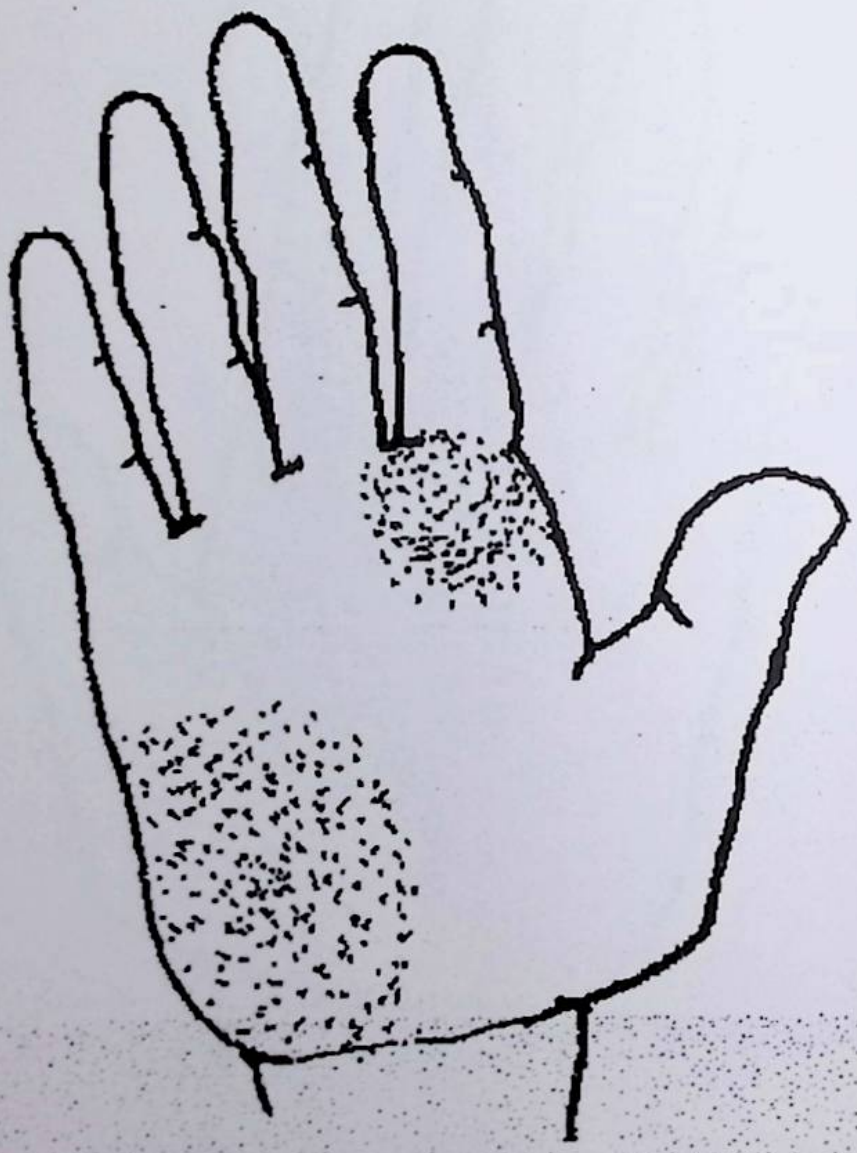

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. गुरू क्षेत्र पर चिन्ह

गुरू पर्वत क्षेत्र पर स्टार या क्रास सौभाग्य सूचक है।

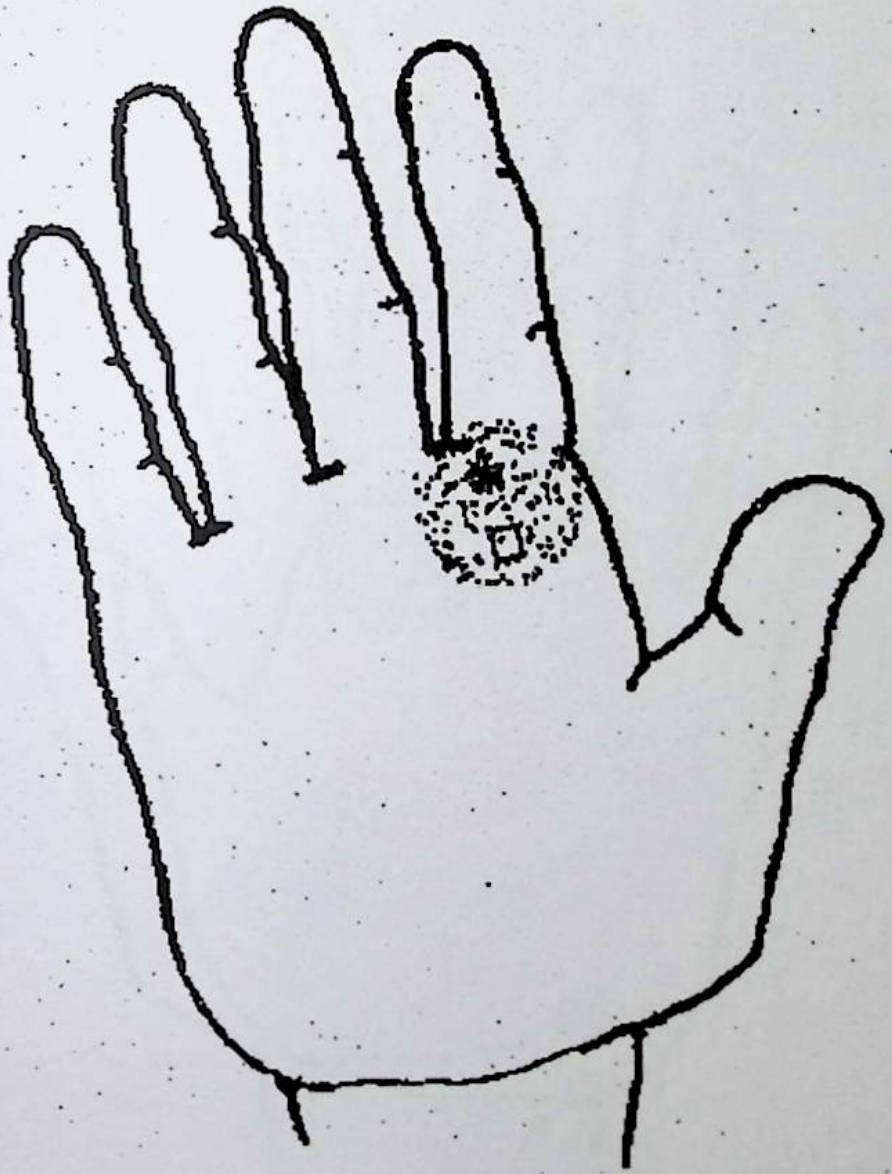

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ग का निशान होने पर जातक को उच्च पद प्राप्त होता है।

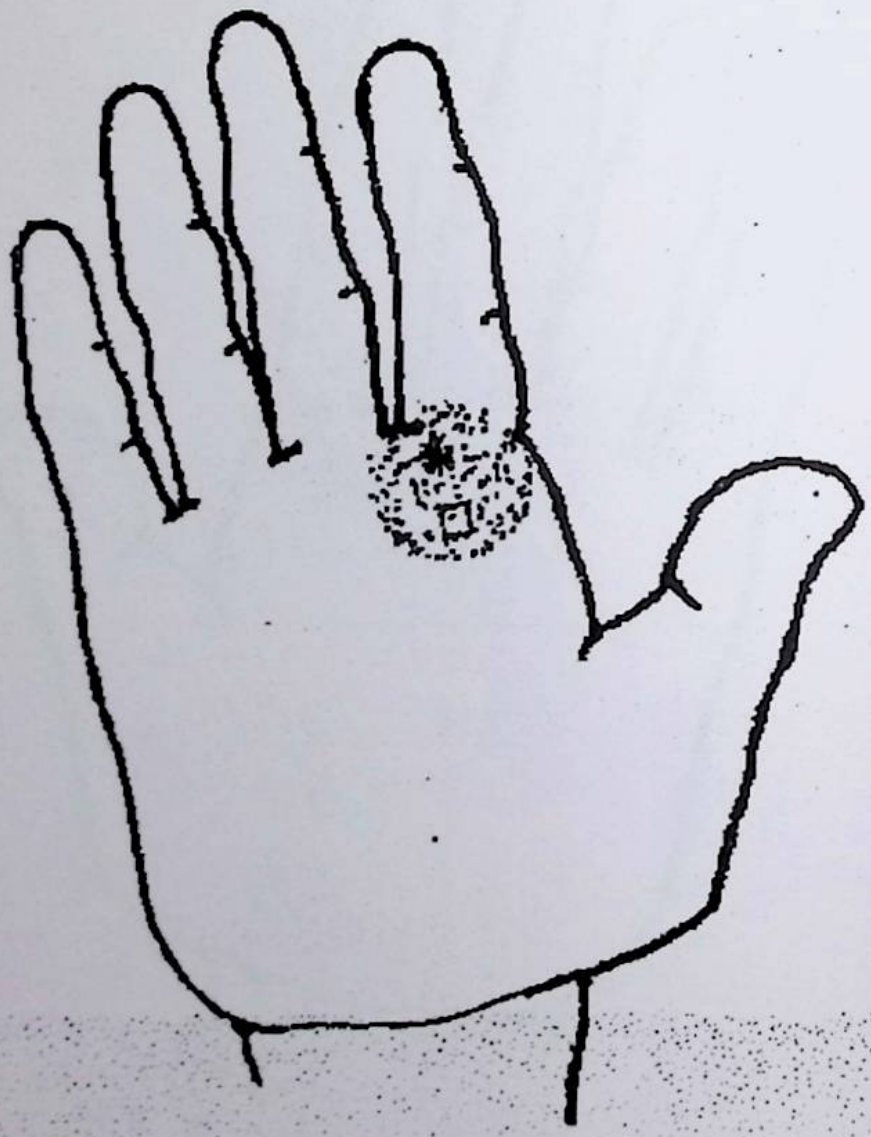

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिकोण होने पर वह राजनीति में विशेष स्थान प्राप्त करता है।

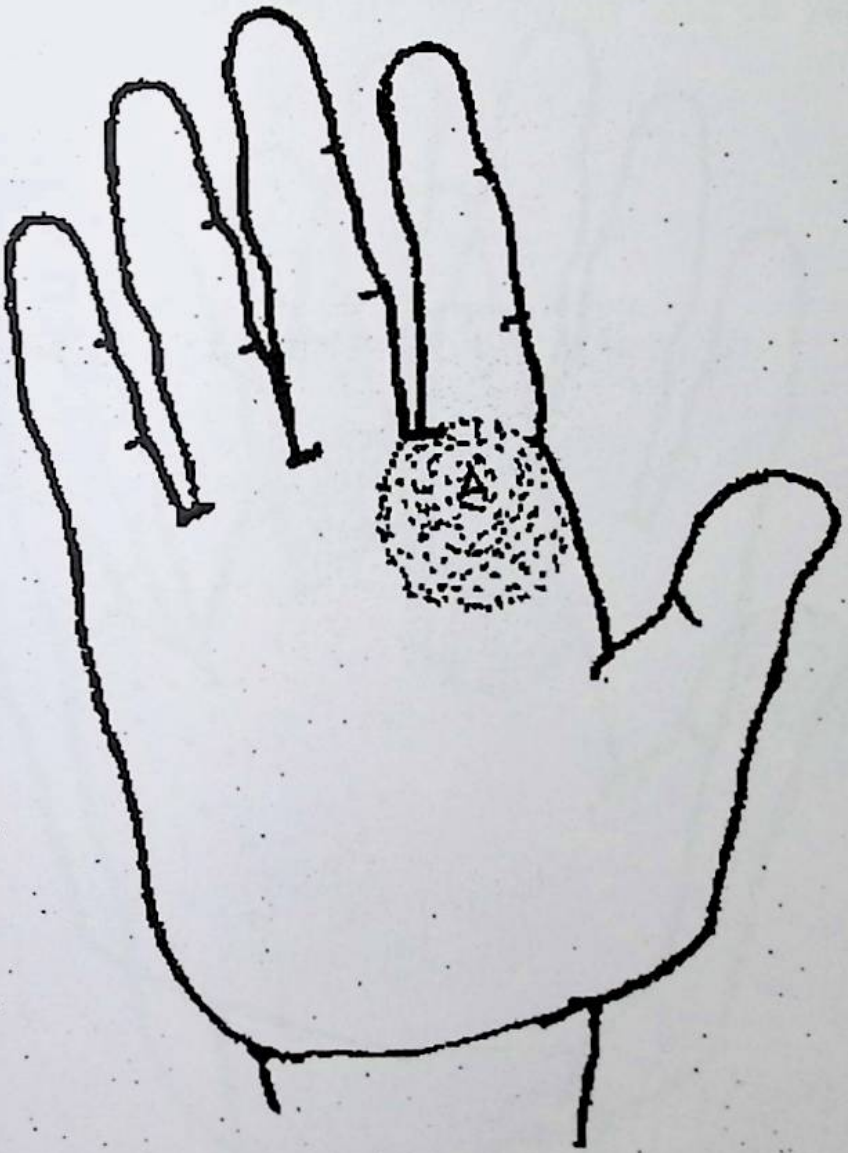

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाल व द्वीप अशुभ माने जाते है।

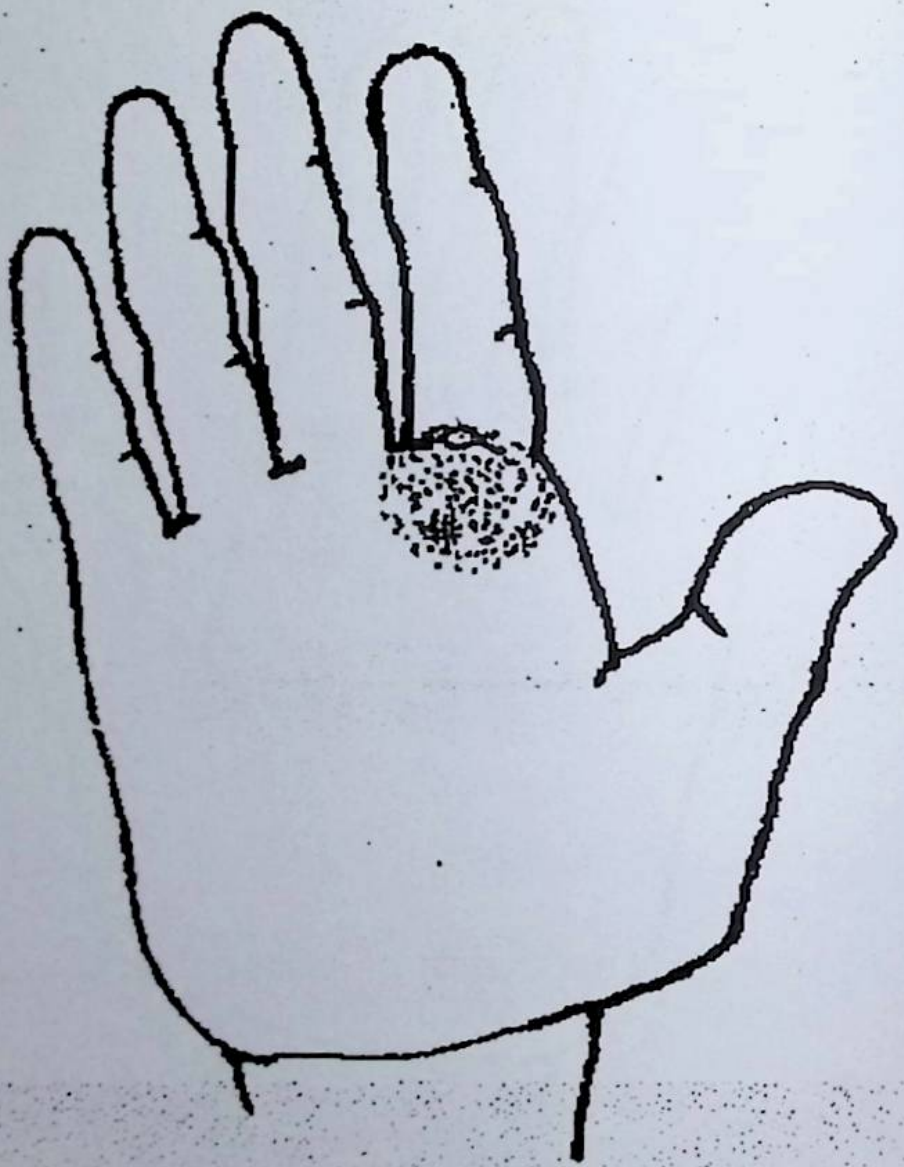

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. हथेली का रंग

यदि गुरू प्रधान हथेली वाले जातक की हथेली का वर्ण श्वेत है तो यह निष्क्रिय व्यक्तित्व को प्रकट करता है। लाल रंग गुरू ग्रह के गुणों को बढ़ाता है। गुलाबी रंग साधारण रहता है। पीला वर्ण होने पर पेट संबंधित रोगों को बढ़ाता है।

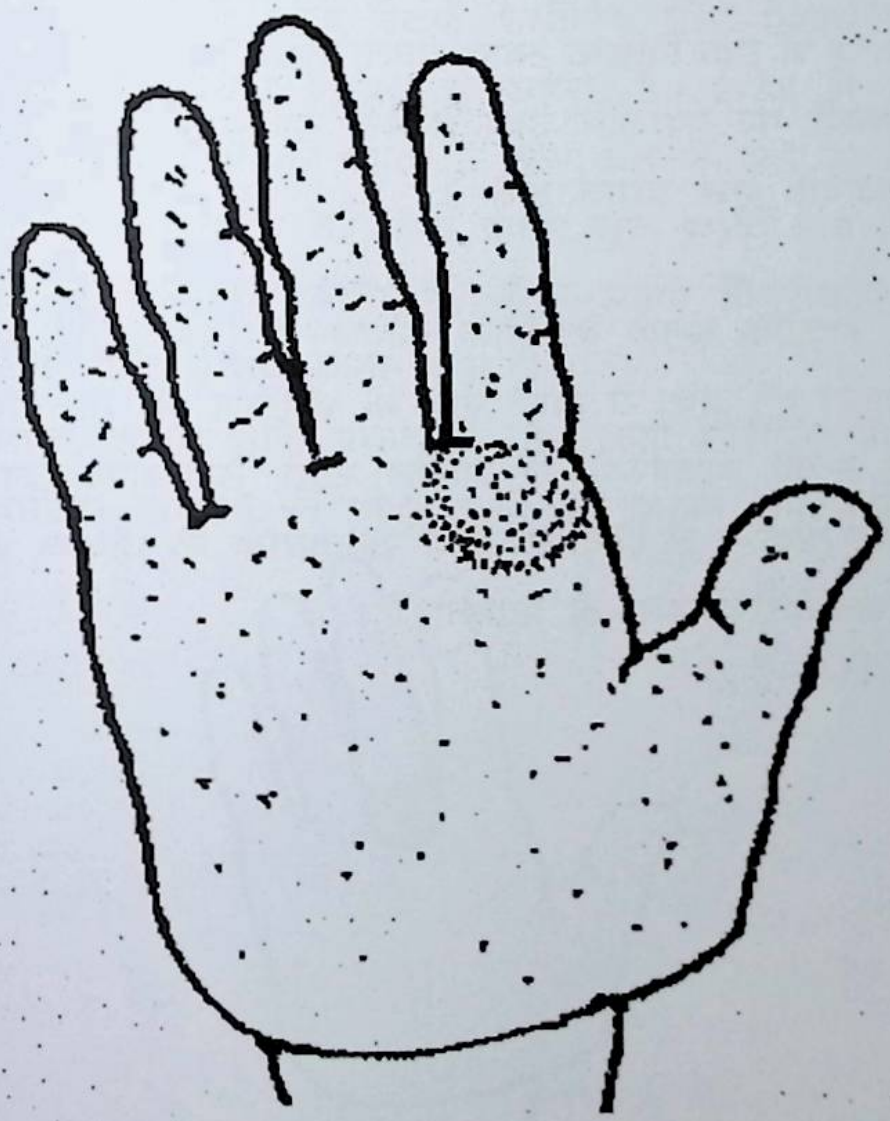

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्कर्ष :–

गुरू पर्वत क्षेत्र का विकसित रूप, जातक में नेतृत्व क्षमता उच्च आंकाक्षा, सिद्धांत प्रियता, कर्मठता, उत्साह, धार्मिक भावना, विचार संतुलन आदि मुख्य प्रवृत्तियों का एक विशिष्ट सामंजस्य बनाता है। इन्हीं कारणों से ऐसे व्यक्ति समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते है। प्रायः राजनैतिक, उच्चपदों पर पदासीन उच्चाधिकारी या धार्मिक संस्थानों के संस्थापक गुरू प्रधान होते है।

हालांकि इनके वैज्ञानिक जीवन में विशेषताएं होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से खाने पीने के शौकिन भी होते है। अतः पेट संबंधी बीमारियों से ग्रसित रहते है। गुरू का स्थान अग्नि त्रिकोण में निर्धारित होने से जातक के जीवन में आग से संबंधित दुर्घटना हो सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत क्षेत्र

सौर मंड़ल में सबसे अधिक दूरी पर स्थित शनि ग्रह है। यह भी आकार में विशाल ग्रह है। शनि पर्वत क्षेत्र शनि ग्रह के गुणों की अभिव्यक्ति करता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रों में शनि को उग्र, क्रुर तथा पाप ग्रह माना गया है। वर्ण से शनि को कृष्ण वर्ण माना जाता है। इसके लक्षणों में प्रमुख रूप से जातक की आयु उसके शारीरिक बल, ऐश्वर्य एवं कार्य क्षेत्र का विचार किया जा सकता है। प्रारंभ में यह परेशानियों विपत्तियों को लाता है और अंत में उन्हें दूर कर सार्थकता प्रदान करता है। जिस प्रकार गुरू प्रधान हाथ पितृ भाव को अभिव्यक्ति करता है, ठीक उसके विपरीत शनि पर्वत क्षेत्र मातृ स्थान कहा गया है।

जातक अगर शनि प्रधान है तो उसकी शारीरिक रचना एवं वैचारिक लक्षणों में मातृ गुणों की काफी सामंजस्यता होगी।

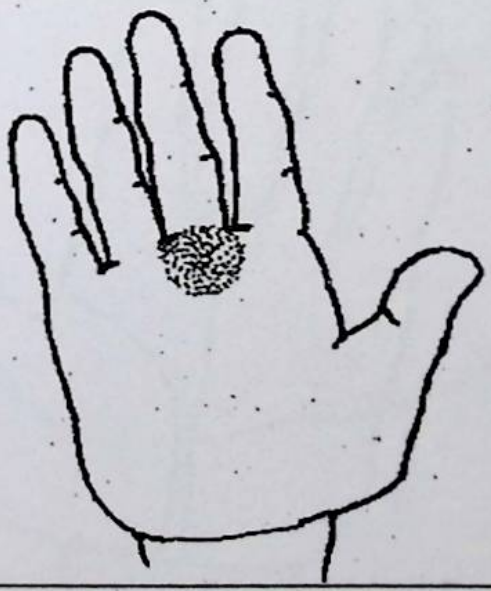

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि क्षेत्र की तन्त्रिकाओं का संबंध मस्तिष्क के उन प्रभागों से संबंधित है जहां उसे संगीत प्रिय लगता है या एकांत ही रास आता है। ऐसा जातक काफी अध्ययनशील, कम बोलने वाला तथा गंभीरता धारण करने वाला होता है। इन्ही कारणों से उसके मस्तिष्क में रहस्यवादी विचारों से लगाव व उन्हीं को अपने जीवन में समाहित करने की प्रवृत्तिया उत्पन्न होती है।

भाग्य रेखा का अंत भी शनि क्षेत्र पर ही होता है अर्थात् मनुष्य के जीवन के अन्तिम पड़ाव वृद्धावस्था में सब सुखों व कठिनाई का मिश्रित फल यह देता है। मनुष्य संतोषी अवस्था को प्राप्त करता है तब सात्विकता को वह शनि की कृपा द्वारा ही प्राप्त करता है। इस आधार पर उन्नति, धन संचय, वैभव तथा भाग्योदय शनि क्षेत्र के प्रभाग हैं।

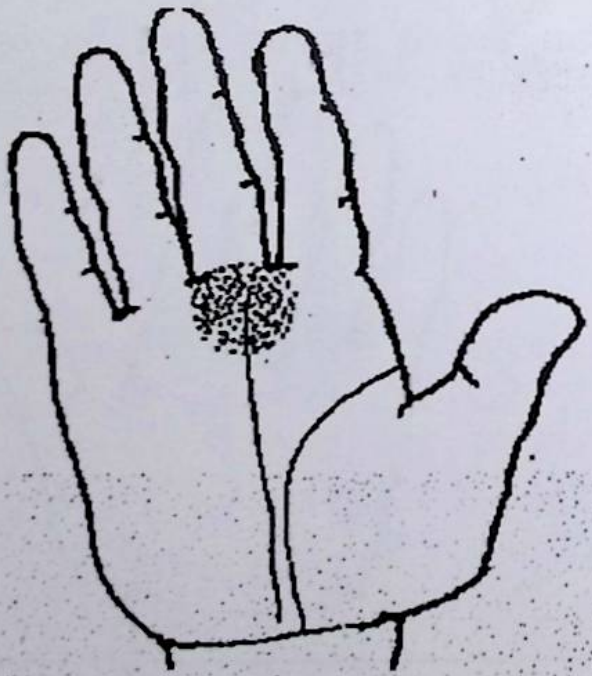

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(अ) उन्नत शनि क्षेत्र / शनि प्रधान क्षेत्र

जब मध्यमा सीधी तनी हुई तथा हथेली के अन्य क्षेत्र सामान्य विकसित एवं शनि क्षेत्र उभार लिये हो तब ऐसे जातक को शनि प्रधान माना जाता है।

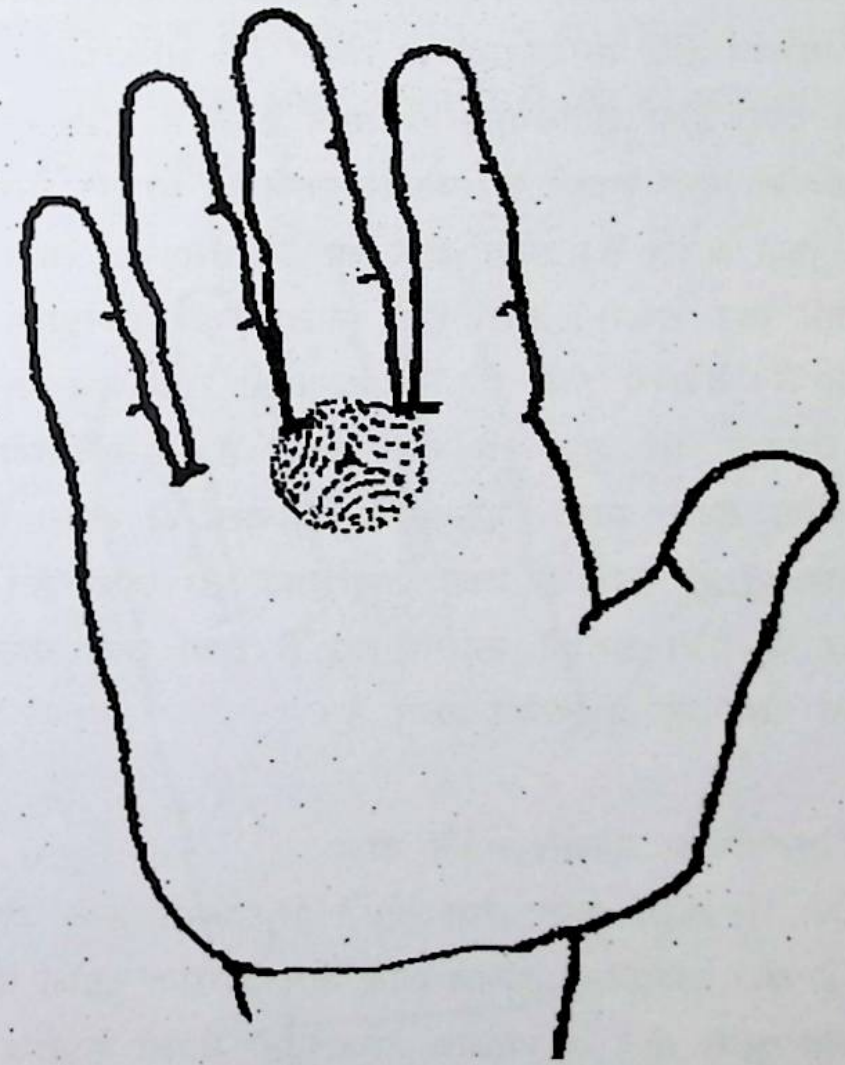

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि प्रधान जातक काफी संवेदनशील होता है। अतः किसी भी कार्य को प्रारंभ करने में देरी नही करता है। कार्य में रूकावट होने से कार्य से पलायन भी तुरन्त कर लेता है। किसी भी बात की तह तक वह जाता है अर्थात् अन्वेषण व सूक्ष्म विश्लेषण जातक का प्रधान गुण होता हैं। अतः अनुसंधान का कार्य, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले कार्य प्रायः शनि प्रधान क्षेत्र के जातक ही करते है। शनि प्रधान जातक सूक्ष्म दृष्टि होने से विचारों में मग्न रहते है अतः लोग इन्हें सनकी भी कह सकते है। गंभीर रहने के कारण इनके मित्र बहुत कम बनते है। स्नेह, प्रेम या आसक्ति का बाह्य प्रदर्शन ये नही कर सकते। अतः ऐसे जातक को समझना अत्यंत कंठिन है। वैराग्य होने पर ये सन्यासी तक बन सकते है। ऐसे जातक धर्म गुरू भी बन सकते है। इनके जीवन का अधिकांश समय प्रायः निराशा व खिन्नता में रहता है। अतः ये आक्रोश में रहते है तथा भाग्यवादी हो जाते है। धर्म व संगीत के प्रति इनकी रूचि होती है तथा जन कल्याण व समाज सेवा में ये तत्पर रहते है।

(ब) अत्यधिक उन्नत शनि क्षेत्र

वैसे तो प्रायः बहुत कम लोगों में उन्नत शनि क्षेत्र पाया जाता है और अत्यधिक उन्नत शनि क्षेत्र तो एक दुर्लभ घटना है।

जब शनि क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो जाता है तब जातक आध्यात्मिक व रहस्यवादी प्रकृत्ति का उपयोग कर अनैतिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्य करने में हिचकिचाता नहीं है। जो कि आगे चलकर उसकी मान-प्रतिष्ठा को कठिनाईयों में डाल देती है। ऐसे जातक रसायन विद्या तथा दुर्गंध वस्तुओं के व्यापार से अधिक लाभ कमा सकते है।

(स) अविकसित या सपाट शनि क्षेत्र

जब शनि क्षेत्र अपेक्षाकृत समतल या दबा रहे, अंगुलियों के प्रथम पोर अधिक फेली अवस्था में हो तो जातक काफी निराशावादी हो जाता है।

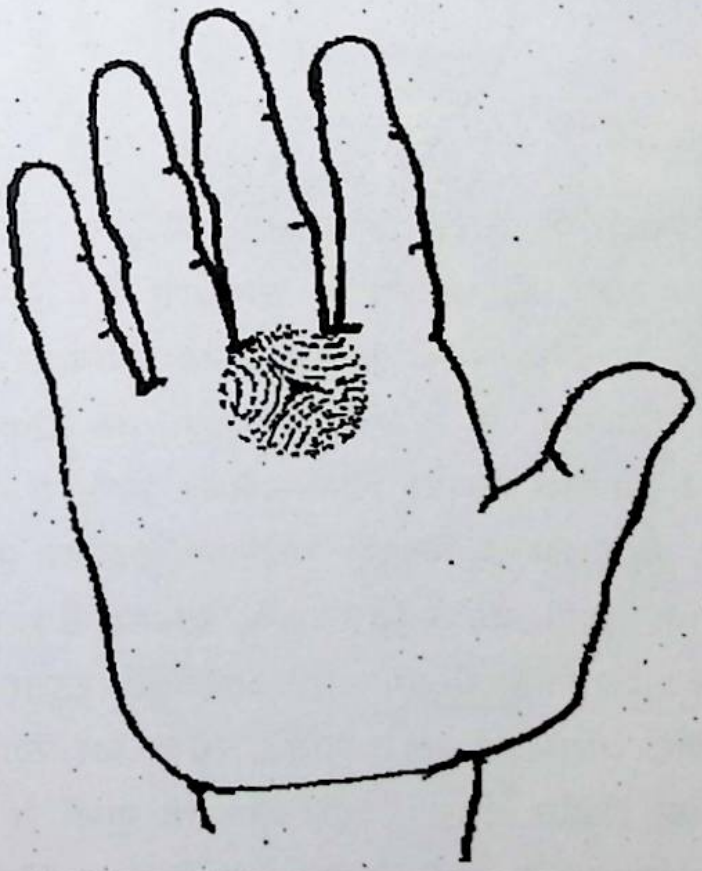

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

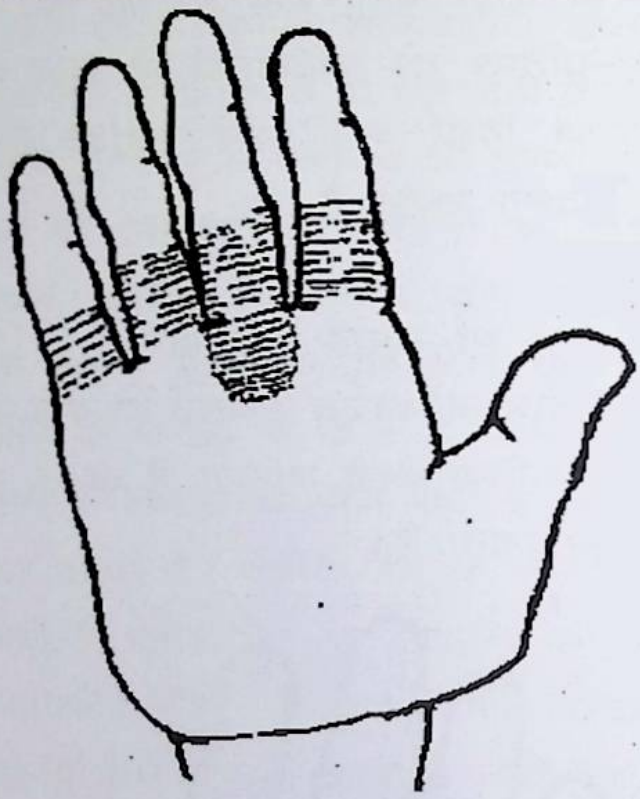

हर कार्य के नकारात्मक पहलुओं पर वह पहले गौर करता है। स्वयं को आत्महीन समझता है। किसी भी कार्य को रूचि से न करने के कारण उसके व्यवहार में खिन्नता रहती है। समाज से अलग हो प्रायः वह एकांत प्रिय हो जाता है। आर्थिक स्थिति छिन्न-भिन्न होने से गलत कार्यो में प्रवृत हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप पाप कर्मो में पड़ जातक स्वयं का जीवन नष्ट करता है। ऐसा जातक पाखंड़ी व तंत्र विद्याओं की ओर आकर्षित रहता है। हाथ के अन्य गुणों, अंगुलियों की बनावट, त्वचा का रंग, हथेली पर रेखाओं की स्थिति, चिन्ह, शनि क्षेत्र के गुणों व अवगुणों में अधिकता या कमी लाते है। इनका विस्तार निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. शनि क्षेत्र व अंगुलियों की बनावट

विकसित शनि क्षेत्र के साथ अंगुलियों की सुदृढ़ता, शनि द्वारा प्रदत्त दोषों का निराकरण करती हैं।

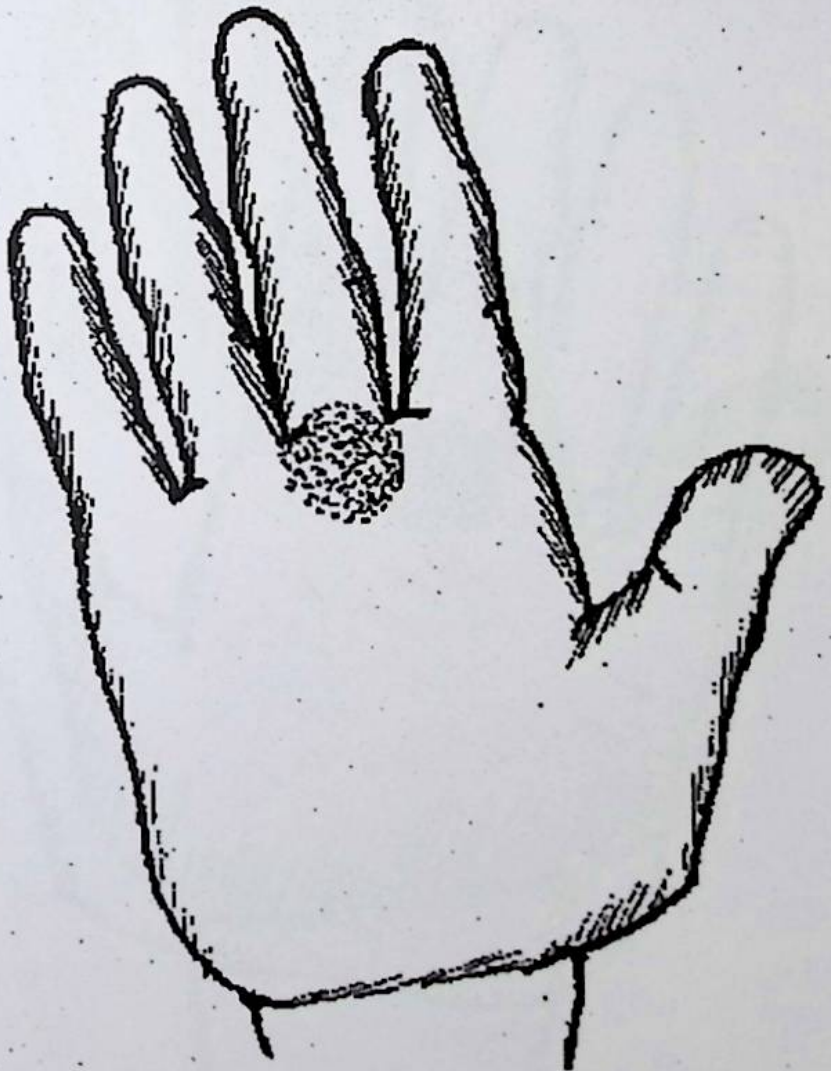

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियों की कोमलता जातक के मन को निर्मल करती है। प्रायः शनि प्रधान व्यक्ति के मित्र कम होते है पर कोमल अंगुलियों वाले जातक के अधिक मित्र होंगे।

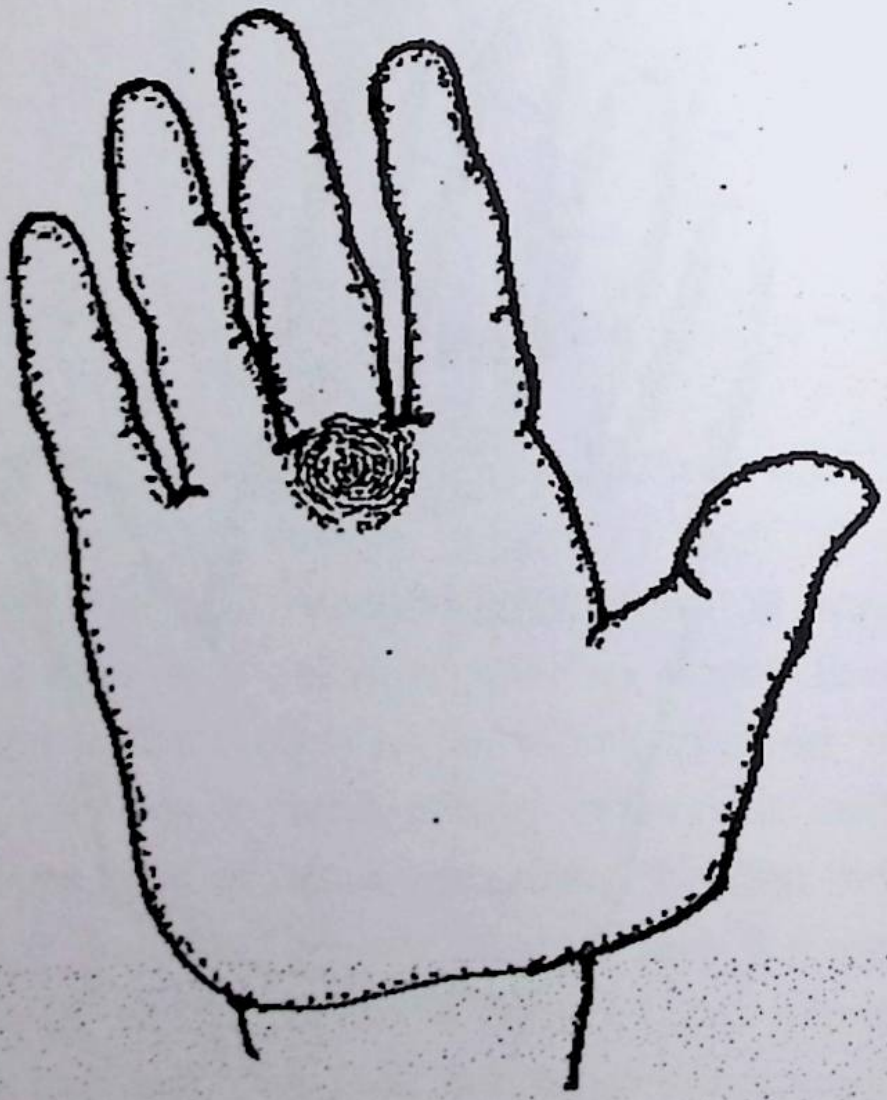

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित अंगुली की कठोरता जातक में क्रूरता को बढ़ावा देगी।

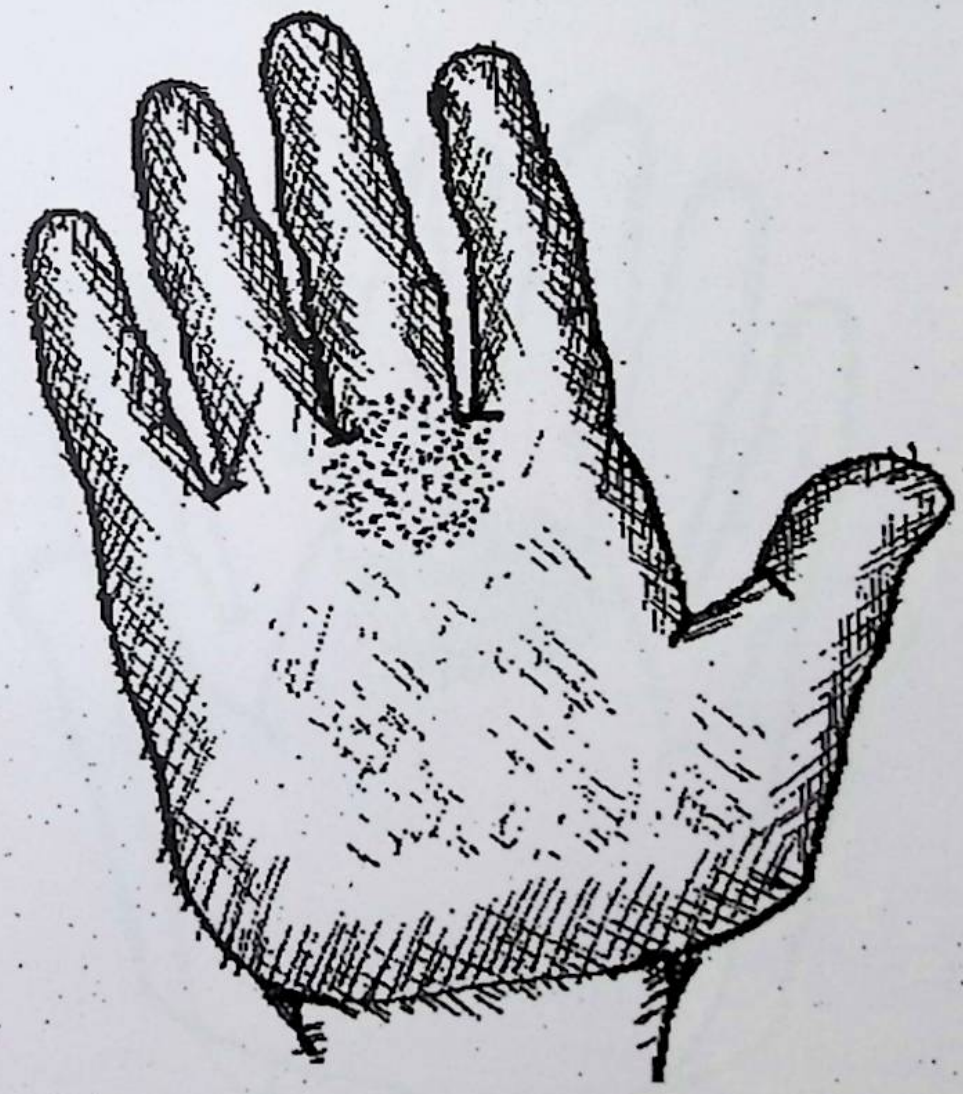

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि प्रधान व्यक्ति की अंगुलियां वर्गाकार होने पर इन्हें रसायन विद्या चिकित्सा क्षेत्र में सफल बनाती है। प्रायः वैज्ञानिक व ख्याति प्राप्त चिकित्सक शनि प्रधान व वर्गाकार अंगुलियों वाले जातक होते है।

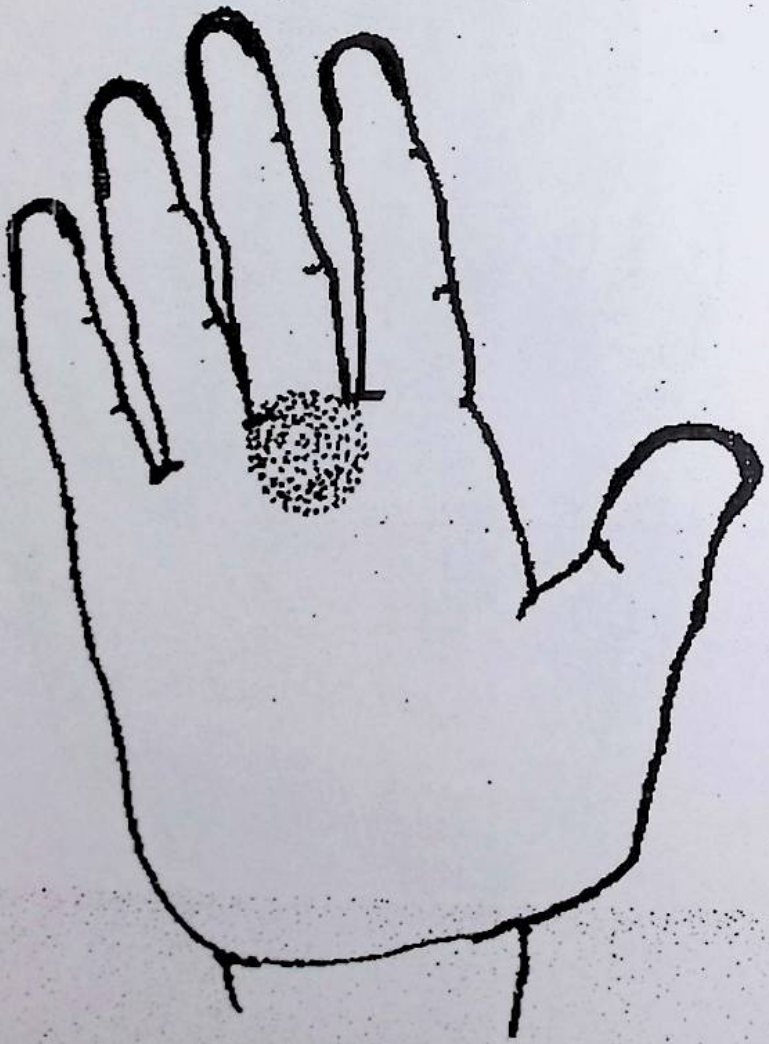

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. अन्य पर्वत क्षेत्रों के साथ सामजंस्य

यदि शनि पर्वत गुरू पर्वत की ओर झुका हुआ है तो जातक के जीवन का पूर्वार्द्ध कठिनाईयों में बीतता हैं परन्तु वृद्ध अवस्था में उसे सभी सुख प्राप्त होते है। आध्यात्म में जातक की रूचि होती है तथा सात्विक प्रवृत्ति उसमें जागृत होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत सूर्य क्षेत्र की ओर झुका हो तो ऐसा जातक अस्त–व्यस्त जीवन जीने वाला परन्तु परिश्रमी व चतुर होता है। क्योंकि दोनों पर्वत क्षेत्रों के फल समान होते है।

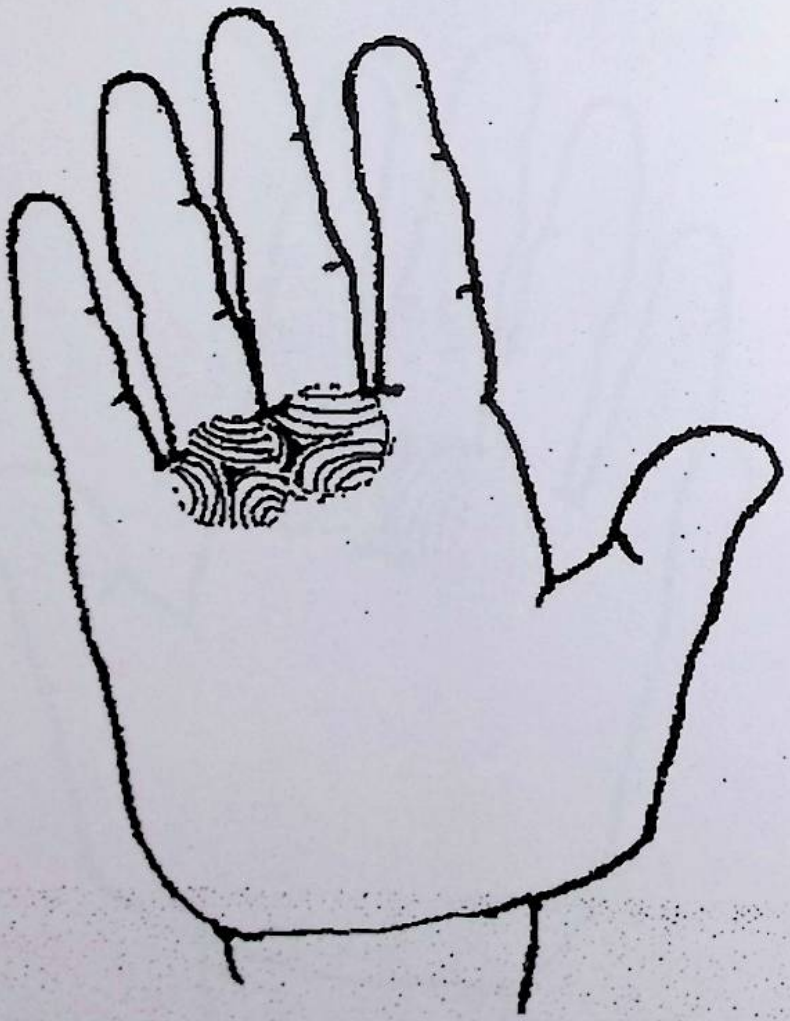

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत उच्च एवं उन्नत होकर सूर्य पर्वत की ओर हो तो जातक धूर्त, चरित्रहीन एवं ठग विद्या में पारंगत होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध व शनि पर्वत समान रूप से विकसित होने पर जातक अध्ययनशील, गुप्त विद्याओं का धनी होकर समाज में अच्छा स्थान प्राप्त करता है। ऐसे जातकों की प्रवृत्ति भौतिक सुख व लोभी प्रकार की होती है।

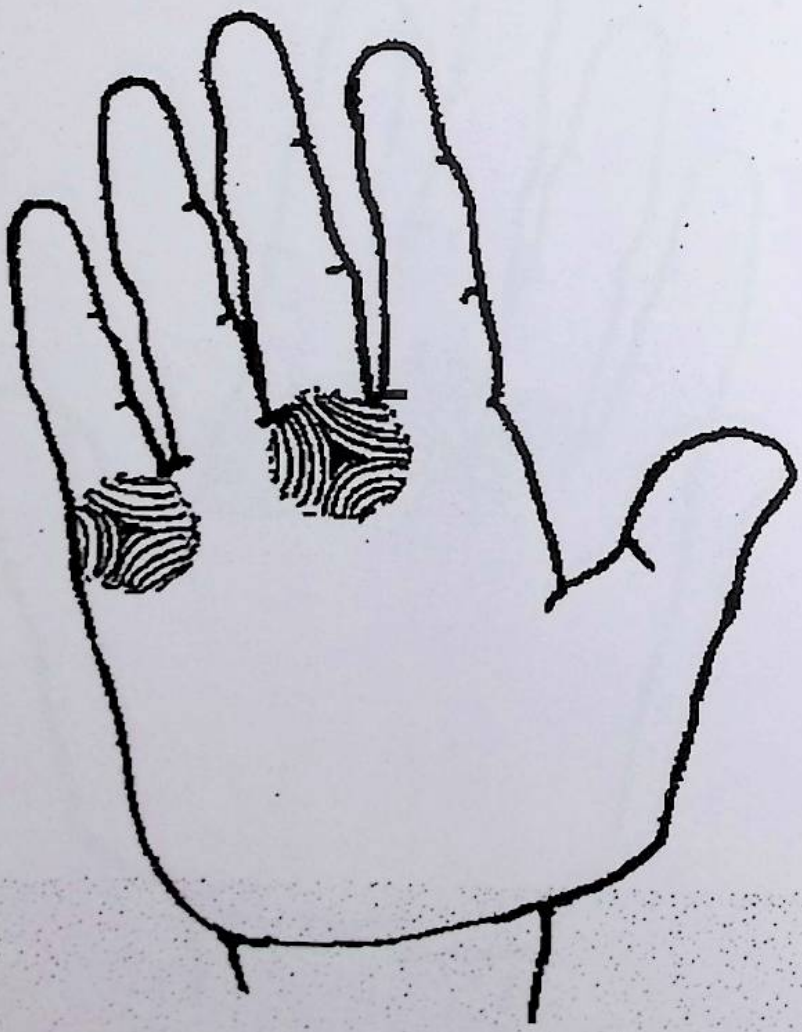

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्र पर्वत और शनि पर्वत समान रूप से विकसित होने पर जातक कल्पना लोक में विचरण करने वाला, संगीत में रूचि रखने वाला परन्तु शिक्षा पुर्ण नहीं कर पाता हैं। जातक स्वावलंबी हो सम्मान पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

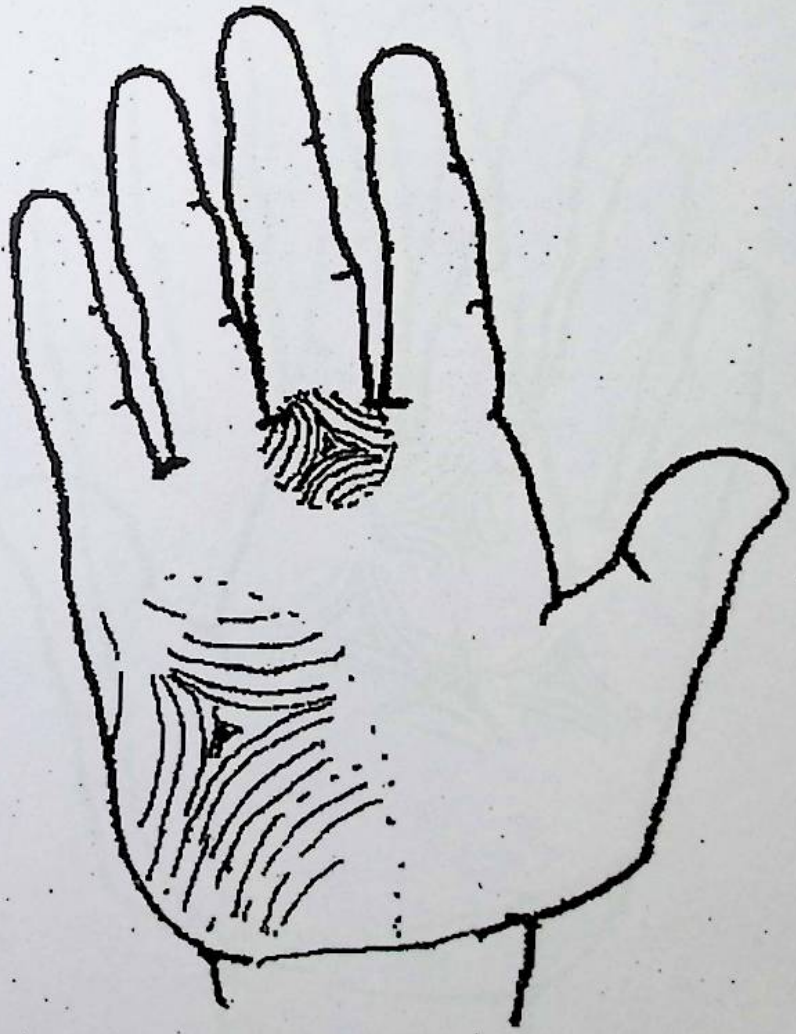

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल पर्वत क्षेत्र व शनि पर्वत उन्नत होने पर जातक में क्रुरता का समावेश होता है। आगे जाकर ऐसा जातक अपराधिक प्रवृत्ति में प्रवृत्त होकर नीच कर्मो में उलझकर अपना जीवन नष्ट करता है।

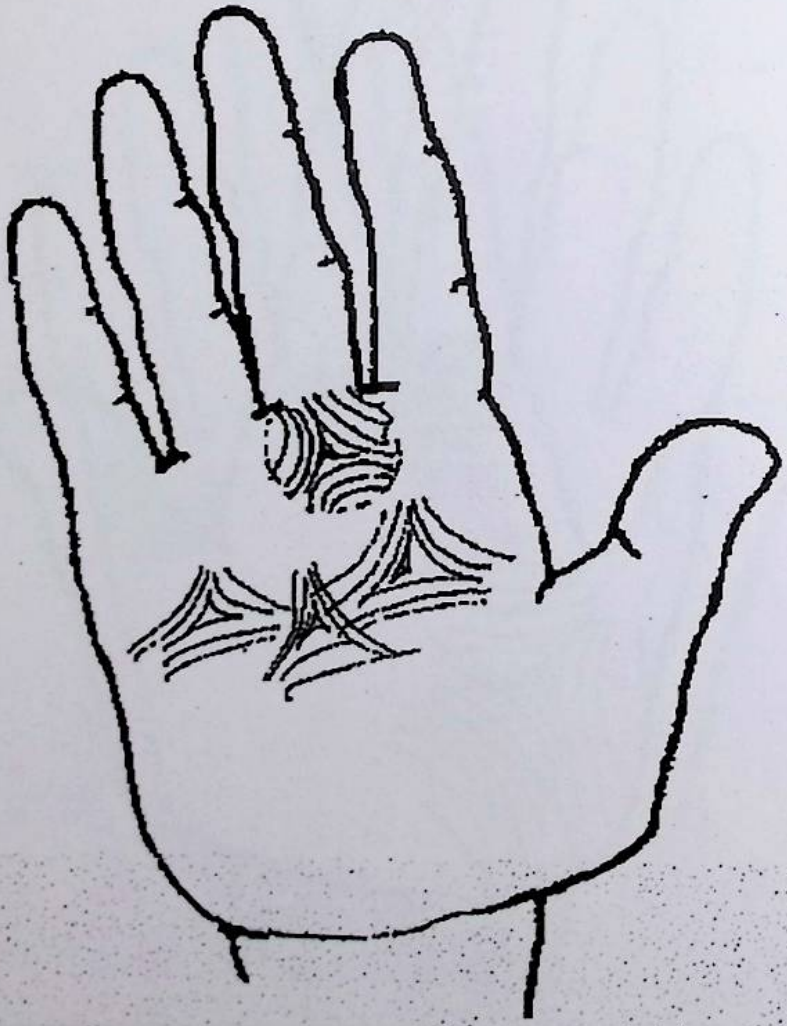

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. शनि पर्वत पर चिन्ह / रेखाएं

शनि पर्वत पर तारा, क्रास , इत्यादि का चिन्ह अशुभ होता है।

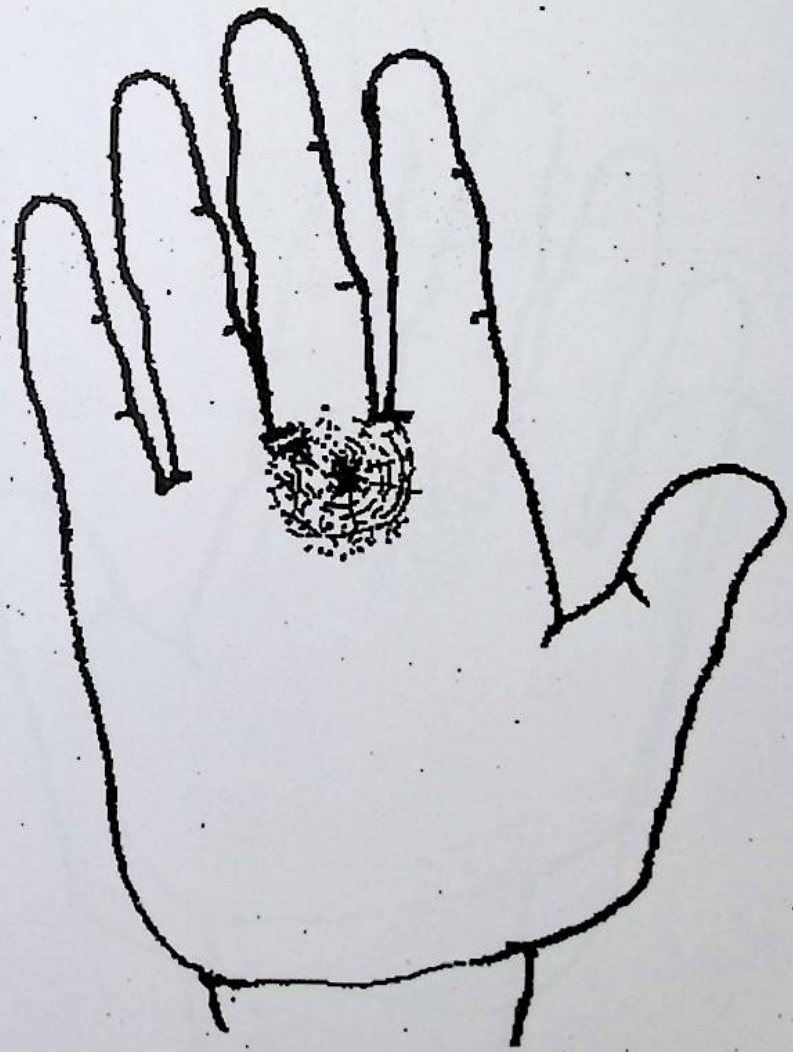

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत पर त्रिकोण होने से जातक गुप्त विद्याओं एवं तंत्र–मंत्र का ज्ञाता होता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत पर सीधी रेखा खड़ी हो तो वह जातक को भाग्यवान बनाती हैं

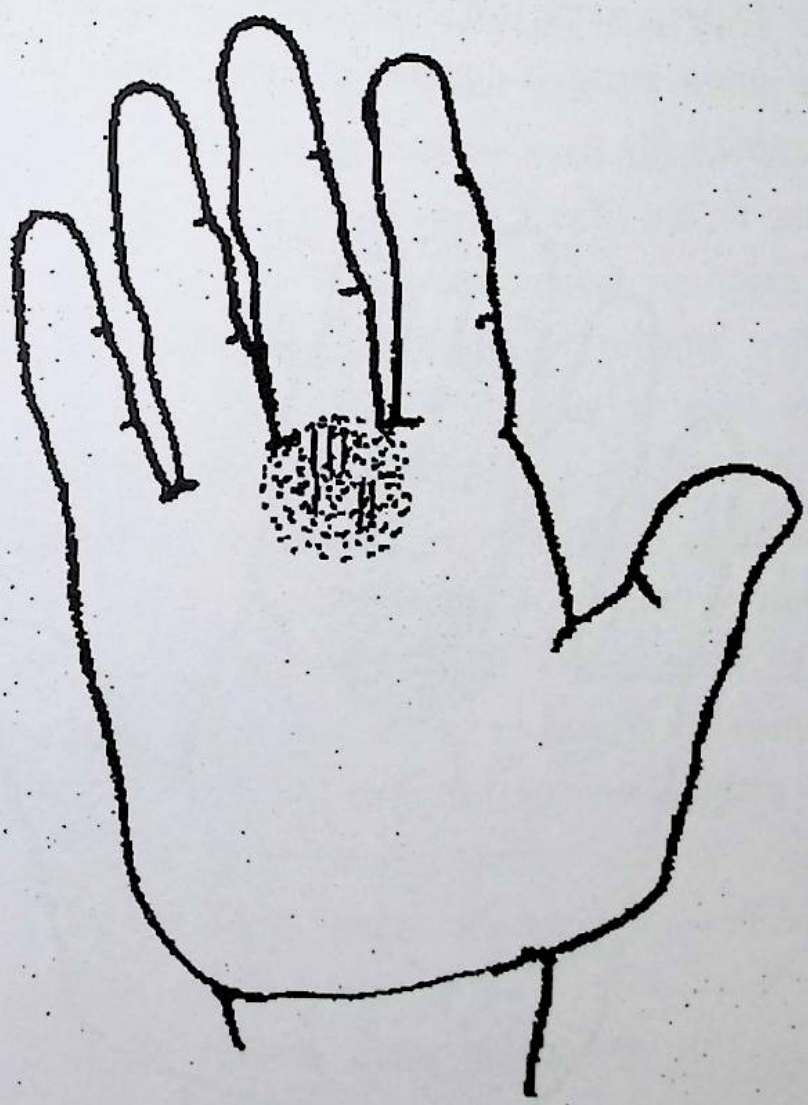

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. हथेली का रंग

यदि शनि प्रधान जातक की हथेली का रंग पीला व मटमेलापन लिये हो तो उसके यकृत में कमजोरी होगी। जातक निर्बल, उदास एवं रोगी होगा। लाल रंग शुभ है लेकिन उग्रता बढ़ाता है। गुलाबी रंग शनि प्रधान जातकों में श्रेष्ठता लाता है।

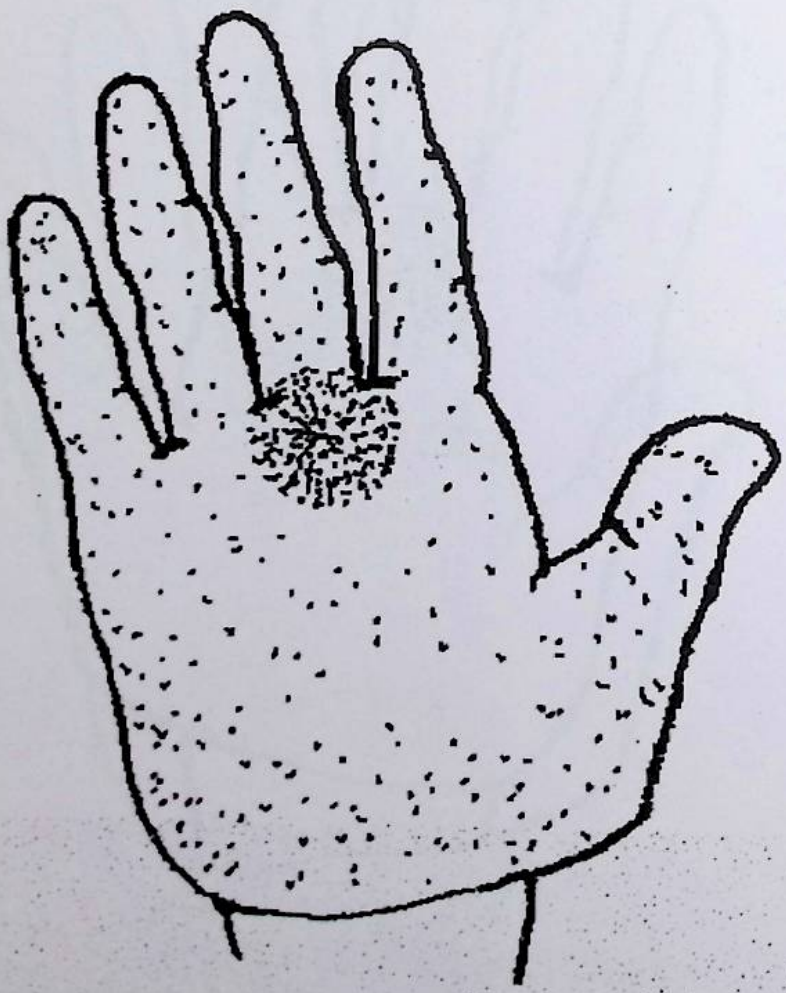

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्कर्ष

विकसित शनि क्षेत्र शुभ होता है। शारीरिक दृष्टि से ऐसा जातक दुबला-पतला, अधिक लंबा, थोड़ा बैड़ोल भी हो सकता है। गंभीर प्रवृत्ति का होने से जातक में सौम्यता होती है। अतः लोग इन्हें एकदम समझ नहीं पाते। ये एकांतप्रिय होते है एवं अपनी धुन में रमें रहते है। समाज के लिये ऐसे जातक कार्य करते है। लेकिन इनमें प्रचारक भाव नहीं होता है। किसी भी कार्य की उच्च स्थिति तक ये जातक पहुंचते है जैसे अगर ये वैराग्य धारण करेगें तो गृहस्थ जीवन पूर्ण रूप से छोड़ देगे एवं किसी को परेशान नहीं करेगें। ये संवेदनशील होने से अपने आप से ही दुखी रहते है। पाप कर्मो में लगेगें तो रहस्यवादी या तंत्र विद्याओं का उपयोग कर अत्यंत नीच कर्मो तक पहुंच जायेगें। दुष्ट कर्मो में हत्या या स्वयं आत्म हत्या करने मे भी नहीं हिचकिचाएंगे। वैसे शनि क्षेत्र शनि ग्रह के गुणों से युक्त होने से जातक को रसायन, दुर्गंध युक्त चीजों या धातुओं के व्यापार में काफी उच्च स्थान पर ले जाता है। भारतीय ज्योतिष में इसे पाप ग्रह माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से हड्डियों में जोड़ संबंधित, गठिया, यकृत में कमजोरी, शारीरिक निर्बलता, इत्यादि होती है। जीवन में पैर व घुटने की चोट व दांतों का टूटना भी शनि के प्रभाव से होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaiapole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh